हिन्दी काव्य-प्रबंध—माला-पुस्तक पहिली।

छंद:सारावली

अर्थात

सरल भाषा-पिंगल

जिसमें छंद प्रभाकर में वर्णित छन्दों के अतिरिक्त अनेक
नूतन छन्दों के नाम, नियम, यति आदि बातें
सुगमता पूर्वक संक्षिप्त रूप से सूत्रवत् एक एक
पंक्ति में ही वर्णित है और सूची, प्रस्तार,
नष्ट, उद्दिष्ट, मेरु, मर्कटी, पताका
इत्यादि के भेद भी अत्यंत
सरल रीति से
प्रदर्शित किये
गये हैं।

—रचयिता—
साहित्याचार्य्य बाबू जगन्नाथ प्रसाद भानु-कवि,
रिटायर्ड ई० ए० सी०, बिलासपुर, मध्यप्रदेश।

जगन्नाथ प्रेस, बिलासपुर में मुद्रित।
सन् १९१७ ई०

प्रथम बार ' ०० प्रति] [मू० ॥=)



PRINTED BY S ABDULLA MANAGER AT THE
"JAGANNATH PRESS"—BILASPUR, C P
AND
PUBLISHED BY MR B JAGANNATH PRASAD
PROPRIETOR



विज्ञप्ति ।

जगदीश्वर को कोटिश धन्यवाद है कि जब से छन्द प्रभाकर पिंगल का तृतीय संस्करण प्रकाशित हुवा है तब से भारतवर्ष में उसका और भी अधिक प्रचार बढ़ गया है । कई लोग यह पूछ सकते हैं कि जब ऐसी स्थिति है तब इस दूसरी पुस्तक के रचने का क्या प्रयोजन है ? उत्तर में हम उन पत्रों में से जो अनेक साहित्य परीक्षार्थियों की ओर से आये हुए हैं, एक यहां उद्धृत करते हैं :—

"भानु महोदय, छन्दःप्रभाकर मिला । यह ग्रंथ जैसा वृहद् और उपादेय है, उस हिसाब से इसका मूल्य कुछ भी अधिक नहीं । किंतु, हम जैसे शक्तिहीन विद्यार्थियों के लिये यह मूल्य भी अधिक जान पड़ता है, तथा परीक्षा के हेतु तैयारी करने में इनमें दिये हुए लक्षणों के याद करने में अधिक समय और परिश्रम व्यय होता है ।

क्या आप हम लोगों के हितार्थ इसी विषय पर एक छोटी सी पुस्तक रचने की दया न दिखावेंगे, जिसमें छंदों के लक्षण, उदाहरण आदि सारी बातें संक्षिप्त रूप में बता दी जावें, साथ ही उसका मूल्य भी अधिक न हो" ।

बस, यह छंद सारावली इन्हीं पत्रों का परिणाम है । इसमें अनेकानेक छंदों का समावेश है और उनके लक्षण नाम तथा उदाहरण सूत्रवत् एक एक पंक्ति में ही लिखे गये हैं । अंत में गणित विभाग भी बहुत सरल कर दिया गया है । आशा है कि हिंदी साहित्य परीक्षा में विद्यार्थियों को इससे अत्यंत लाभ होगा । मूल्य भी स्वल्प ही रक्खा गया है । हां इतना अवश्य कहना होगा कि यदि गहरे जाने की इच्छा हो तो छन्दःप्रभाकर अवश्य देखिये । ईश्वर ने चाहा तो इसी परिपाटी के अनुसार रस तथा अलंकारादिक के भी संक्षिप्त ग्रंथ शीघ्र प्रकाशित होंगे ।

जगन्नाथ प्रसाद,

भानु-कवि ।

भूल–सुधार

पृष्ठ	छद	सुधार
२०	(पादसूचना) सुमेरु	सुमेरू
२९	२ पद्मावती	अन्य नाम–कमलावती
३२	१ हरिप्रिया	अन्य नाम–चञ्चरी
५२	१३ वामा	अन्य नाम–सुखमा
५५	२४ हारिणी	२४ हरिणी
५५	२७ दोधक	अन्य नाम–बधु
३२	५३ (मातु	५३ (साधु)
७१	८ विश्वगति	अश्वगति
८२	५ मदिरा	अन्य नाम-मालिनी, उमा, दिवा
८६	३ सुख	अन्य नाम–किशोर

पाठकों से विनय है कि कृपया, पढ़ने के पूर्व सुधार लेवें।



सूचीपत्र ।

छंदों के नाम	पृष्ठ
अ	
अग्र	८३
अचल	७६
अचलधृति	७१
अतिगाथा	८४
अतिबरवै	३४
अतिशायिनी	७३
अनवसिता	५६
अनङ्गशेखर	८७
अनुराग	७७
अनुकूला	५५
अनुष्टुप	४९
अनल	६६
अपरभा	४७
अपराजिता	६६
अभंग	९१
अमी	५०
अमृतकुण्डली	२१
अमृतधुनि	३९
अर्द्धाली	१९
अरविंद	८६
अरसात	८५
अरल	२१
अरिल्ल	१८
अश्वगति	७१
अश्वललित	८४
अशोकपुष्पमञ्जरी	८७
असम्बाधा	६४
अहि	८१
अहीर	१६
अघा	४७
आ[illegible]	१९
आभार	८८
आभीर	१६
आर्या	४१
आर्यागीति	४१
आल्हा	२९
ओवी	९१
इ	
इंदिरा	५६
इन्दव	८३
इन्द्रवज्रा	५५
इन्द्रवंशा	५८
इन्दुवदना	६६
ईश	४८
उ	
उज्वला	६[illegible]
उडियाना	२०
उत्पलिनी	६४
उद्गीति	४१
उद्धत	३२
उद्धर्षिणी	६६
उपगीति	४१
उपजाति	५५
उपमान	२२
उपमालिनी	७०
उपस्थित	५५
उपस्थिता	५२
उपचित्र	५४
उपेन्द्रवज्रा	५५
उमा	८०
उल्लाल	२६
उल्लाला	१६
उषा	४८

ऋ

ऋषभ	६८
ऋषभगजविलसिता	७१

ए

एकावली	६३
एला	६८

क

कज्जल	१७
कञ्जअवलि	६३
कनकप्रभा	६२
कन्द	६२
कन्दुक	६२
कन्या	४५
कबीर	२५
कमल	४४
कमला	५०
कमलावती	२९
करखा	३१
करना	४६
करहंस	४७
कलहंस	६३
कला	४५
कली	५६
कवित्त	८८
कांता	७२
का तोरथीडा	५९
कामकला	१८
कामक्रीडा	६७
कामदा	५१
कामना	५०
कामरूप	२७
काव्य	२३
कामा	४४
काव्य	२३
किरीट	८५
किशोर	८६
कीर्ति	५१
क्रीडा	४५
कुकुभ	२८
कुंज	६८
कुटजा	६३
कुटिल	६५
कुटिलगति	६६
कुण्डल	२२
कुण्डलिया	३९
कुन्दलता	८६
कुमारललिता	४७
कुमारी	६६
कुसुमविचित्रा	६०
कुसुमस्तवक	८७
कुसुमितलतावेल्लिता	७४
कृपाण	८९
कृष्ण	४५
केतकी	७६
केसर	७४
केहरी	५७
कोकिल	७४
क्रौंच	८६

ख

खंजन	८४
खरारी	३०

ग

गगनाङ्गना	२८
गंग	१५
गंगाधर	८६
गंगोदक	८४
गजगती	४९
गजल	१७
गण्डका	८०
गरुडरुत	७१
गाहिनी	३८
गिरिधारी	५८
गीता	२५
गाति	[illegible]

गीतिका (मात्रिक)	२५
गीतिका (वर्णिक)	८०
गुपाल	१८
गोपी	१७
गौरी	५८
ग्राहि	५८
घ	
घनश्याम	७०
घनाक्षरी	८८
घनाक्षरी (रूप)	८८
घनाक्षरी (देव)	८०
च	
चक्र	६६
चकिता	७१
चकोर	८४
चञ्चरी (मात्रिक)	३३
चञ्चरी (वर्णिक)	५५
चञ्चरीकावली	६२
चञ्चला	७०
चञ्चलाक्षिका	६०
चण्डी	६३
चन्द्र	७०
चन्द्रकान्ता	६८
चन्द्रमणि	१६
चन्द्रलेखा	६७
चन्द्रवर्त्म	५७
चन्द्ररेखा	६४
चन्द्रिका	६४
चन्द्रावत्सा	६०
चन्द्रौरसा	६५
चम्पकमाला	५२
चपल	७०
चपला	५५
चवपैया	२७
चान्द्रायण	२१
चामर	६७
चित्रा	६७
चित्रपदा	४८
चित्रलेखा	७४
चुलियाला	२७
चौपद	९७
चौपाई	१८
चौबोला	१७
चौरस	४६
छ	
छप्पय	४०
छवि	१९
छाया	७९
ज	
जग	७३
जयकरी	१७
जलधरमाला	५७
जलोद्धतगति	५०
झ	
झूलना (प्रथम)	२०
झूलना (द्वितीय)	३१
झूलना (तृतीय)	३१
ड	
डमरु	८०
डिल्ला	१८
त	
तन्वी	८०
तनुमध्या	४६
तर्पा	४७
तरल	७०
तरङ्गिनी	४५
तरलनयन	६२
तरङ्ग	७३
ताटक	७८
तामरस	६०
तारक	६३
तारा	४५
तारिणी	६२

ताली	४४
तीणा	४५
तिलका	४६
तिल्लना	४६
त्रिलोकी	७१
तोम	७६
तुग	४८
तुरगम	४८
तूण	६७
तोटक	५७
तोमर	१६
त्वरितगति	५३

द

दण्डक	३१, ८७
दण्डकला	३०
दण्डिका	८०
दमनक	५६
दान	५९
दिगपाल	२३
दिवा	८२
दिंडी	२०
दीप	१६
दीपक	६९
दीपकमाला	५२
दुर्मिल	३०
दुर्मिल सवैया	८४
देवघनाक्षरी	८९
देवी	४१
दोधक	५५
दोवै	२६
दोहा	३४
दोहा (चण्डालिनी)	३१
दोही	३५
द्रुतपद	६१
द्रुतविलम्बित	६०
द्रुता	५४
द्विज	५३

ध

धत्ता	३६
धत्तानंद	३७
धम	८१
धरणी	५२
धरा	४५
धाम	६७
धारि	४०
धारी	५९
धीरललिता	७१

न

नगस्वरूपिणी	४८
नन्दन	७७
नन्दिनी	६३
नदी	६७
नभ	६१
नरहरी	२०
नराचिका	४८
नरेन्द्र	८१
नलिनी	६८
नवमालिनी	६१
नागराज	७०
नान्दीमुखी	६६
नायक	४६
नाराच	७०, ७७
नारी	४४
निश्चल	६९
नित	१६
निधि	१५
निवास ९ वर्ण	५०
निवास १२ वर्ण	६१
निशिपाल	६९
निमि	४५
नौंग	७१

प

पंकजवलि	६३
पंकावली	६३

पक्ती	४६	प्रज्ञा	७७
पचकावली	८१	प्लवगम	२१
पचचामर	७०	**फ**	
पज्झटिका	१८	फुल्लदाम	७८
पचाल	४४	**व**	
पणव	५१	मधु	५५
पथ्या	६५	मनमाली	५८
पद्धरि	१८	बरवै	३४
पद्म	४९	बाभाछारी	५६
पद्मावती	२९	माला	५१
पवन	६०	बिम्ब ९ वर्ण	५०
पविता	४९	बिम्ब १९ वर्ण	७८
पाइता	४९	बिहारी	२२
पादाकुलक	१९	बीर	२९
पादताली	४९	बुद्धि	३८
पावक	५२	बेताल	२५
पावन	६९	**भ**	
पीयूष वर्ष	१९		
पुट	६०		
पुनीत	१८	भद्रा	४७
पुष्पमाला	६८	भद्रक	८०
पुन	४५	भद्रिका	४९
पृथ्वी	७३	भव	१६
प्रतिभा	६५	भानु	२१
प्रबोधिता	६३	भाग	६९
प्रभाद्रिका	७०	भारती	५३
प्रभा	६०	भाराक्रांता	७२
प्रभाता	२६	भाम	५०
प्रभावती	६३	भुजगशिशुसुता	५०
प्रमदा	६७	भुजंग विजृम्भित	८६
प्रमाणिका	४८	भुजगप्रयात	५७
प्रमिताक्षरा	५८	भुजगसगता	५०
प्रमुदित वदना	६०	भुजगिना	१८
प्रवरललिता	७०	भुजगी	५४
प्रहरणकलिका	६६	भुवाल	५०
प्रहर्षिणा	६२	भूमिसुता	५७
प्रियवदा	६१	भृग	८०
प्रिया	४४	भ्रमरपदक	७७

भ्रमरविलसिता	५३	मन्दाक्रान्ता	७२
भ्रमरावली	६८	मन्दाकिनी	६०
म		मन्दारमाला	८२
		मनमोहन	१७
मकरन्द	८५	मनहर	८८
मकरन्दिका	७०	मनहरण	६८
मञ्जरी	६५	मनहंस	६८
मञ्जरी (सवैया)	८५	मनोरम मात्रिक	१७
मञ्जरी (विषम)	९१	मनोरम वर्णिक	६५
मञ्जीरा	७२	मनोरमा	५३
मञ्जीर	७५	मयतनया	५४
मञ्जुतिलका	२०	मयूरसारिणी	५१
मञ्जुभाषिणी	६३	मयूरी	५१
मञ्जुमाधवी	७०	मरहटा	२७
मणिगुणनिकर	६९	मरहटामाधवी	२७
मणिमध्या	५०	मल्लिका	४८
मणिमाल	७९	मल्लिका (सवैया)	८३
मणिमाला	५८	मल्ली	८५
मणिकल्पलता	७१	महामालिका	७७
मत्तगयन्द	८३	महामोदकारी	७५
मत्तमयूर	६२	महालक्ष्मी	४९
मत्तमातङ्गलीलाकर	८७	महास्रग्धरा	८२
मत्ता	५१	मही	४४
मत्ताक्रीडा	८३	माणवक	४८
मत्तेभविक्रीडित	८०	माला	५३
मदन	७३	माधव	५९
मदागृह	३२	माधवी	८५
मदालसा	७०	मान	७७
मदाहर	३२	मानस	६?
मदनारी	६०	मानिनी	८?
मदलेखा	४७	माया	६२
मदिरा	८२	मालती (पदमाला)	४७
मधु	४४	मालती (दामकाला)	६?
मधुभार	१५	मालती (सवैया)	८३
मधुमती	४७	मालभारी	७३
मध्यक्षामा	६५	मालिनी	६०
मंथान	४६	मालिनी (सवैया)	८?
मन्दर	४४	माला मात्रिक	१०

मालती वर्णिक	५३
मुक्तहरा	८५
मुक्तामणि	७४
मुक्ति	५३
मुकुन्द	६६
मुद्रा	४५
मृगा	४४
मृगेन्द्र	४४
मृगेन्द्रमुख	६४
मृदुगति	२३
मघविस्फूर्जिता	७८
मनावला	५८
मोटनक	५५
मोतियदाम	५९
मोद	८२
मोदक	५०
मोहना मात्रिक	३४
मोहना वर्णिक	६८
मंगल	६८
[illegible]	६५

य

यमक	४६
यमुना	६०
यशोदा	४६
योग	७०

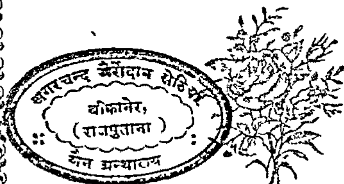
र

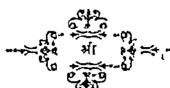
रसा	४५
[illegible]	५०
[illegible]	४९
रथपद	५६
रथोद्धता	५४
रमण	४४
रमा	४५
[illegible]	६१
[illegible]	४९
[illegible]	७४
रसाल	७०
राग	६३
राजीवगण	१९
राधा	६२
राधारमण	६१
राधिका	२७
राम	१९
रामा	४८
राम	२२
रुक्मवती	५२
रुचिरा (मात्रिक)	२८
रुचिरा (द्वितीय)	३६
रुचिरा (वर्णिक)	६३
रूपघनाक्षरी	८८
रूपचौपाई	१९
रूपमाला	२३
रूपा	४७
रेखता	२३
रेवा	६५
रोला	२३
रंगी	४५

ल

लता	७७
ललना	५९
ललित	६०
लालित्य	८२
ललितकेसर	६६
ललितपद	२६
ललिता	५८
लवाङ्गना	८६
लक्षा	८४
लक्ष्मी (मात्रिक)	३८
लक्ष्मी (वर्णिक)	४७
लालसा	७६
लावनी	७८
लीला (प्रथम)	१६
लीला (द्वितीय)	२४
लीला (वर्णिक)	४७

सौरभ	५९	हाकलि	१७
सत	७१	हाकला	५२
सपद्मा	२३	हारिणा	७१
सयुत	५१	हारा	४६
स्रा	४४	हा न	४६
स्रग	६९	हिन	५४
स्रग्धरा	८१	हीर (मात्रिक)	२३
स्रग्विणी	५७	हीर (वर्णिक)	७६
स्वागता	५८	हुलास	२९
		हंस	४६
ह		हंसगति	३०
हरनतन	७०	हंसमाला	४७
हरा	४५	हंसाल	३१
हरि	४५	हंसा (दशाक्षरा)	५१
हरिगीतिका	२६	हंसी (२२ अक्षर)	८२
हरिणप्लुता	७४	**क्ष**	
हरिणा (११ अक्षर)		क्षमा	६४
हरिणी (१७ अक्षर)	७३	**त्र**	
हरिपद	३५		
हरिप्रिया	२३	त्राना	६३
हरिहर	८१	त्रिभंगी	३९
हलमुखी	८९	त्रिभंगी (दण्डक)	८८





छंदःशास्त्र के साधारण नियम।

१ छंद रचने का जिससे ज्ञान हो उस शास्त्र को पिङ्गल वा छदःशास्त्र कहते हैं।

२ पिङ्गल एक महर्षि का नाम है, उनको पिङ्गलाचार्य्य व शेषावतार भी कहते है।

३ वेदों के छै अंगों में से छद एक अंग है, वेद के छै अंग ये है—

१ छद, चरण, २ कल्प, हस्त, ३ ज्योतिष, नेत्र, ४ निरुक्त, कर्ण, ५ शिक्षा, हृदय, ६ व्याकरण, मुख॥

४ पद्यात्मक रचना को छद कहते है जो रचना पद्यात्मक नहीं उसे गद्य कहते है।

५ प्रत्येक छंद वर्णों के सयोग से बनता है।

६ वर्ण दो प्रकार के है, १ लघु जिसका चिह्न (।) है, २ गुरु जिसका चिह्न (S) है, एक तीसरा वर्ण प्लुत कहाता है जिस में गुरु से भी अधिक काल लगता है उसका प्रयोजन सगीत शास्त्र में पडता है। प्लुत की तीन मात्रा होती है।

७ जिसके उच्चारण में थोड़ा काल लगे वह वर्णलघु कहाता है जैसे—

अ, इ, उ, क, कि, कु इत्यादि।

८ अर्द्धचंद्र बिंदु वाले वर्ण भी लघु ही माने जाते हैं जैसे—

हँसी, गँसी, फँसी इत्यादि।

९ जिसके उच्चारण में अधिक काल लगे वह वर्णगुरु है जैसे
आ, ई, ऊ, का, की, कू, के, कै, को कौ कं कः

१० संयुक्ताक्षर के पूर्व्व का लघुवर्ण गुरु माना जाता है जैसे
सत्य, धर्म्म, चित्र, यहां 'स', 'ध' और 'चि' गुरु हैं।

११ संयुक्ताक्षर के पूर्व्व के लघु पर जहां भार नहीं पड़ता
वहां वह लघु का लघुही रहता है जैसे—
कन्हैया, जुन्हैया, तुम्हारी, यहां 'क', 'जु' और 'तु' लघुही

१२ कभीर चरण के अंत में लघुवर्ण इच्छानुसार गुरु माना
जाता है क्योंकि इसका उच्चारण भी गुरुवत् होता है जैसे

लीला तुम्हारी अति ही विचित्र—यह इन्द्रवज्रा वृत्त का एक
चरण है। नियमानुसार इसके अंत में एक गुरु होता है
यहां 'त्र' लघु को गुरु मान लिया, और उच्चारण भी
गुरुवत् किया।

१३ दीरघ हू लघु कर पढै, लघु ही दीरघ मान।
मुख सों प्रगटे सुख सहित कोविद करत बखान॥

अभिप्राय यह है कि वर्णों का गुरुत्व वा लघुत्व केवल
उच्चारण पर निर्भर है जैसे—

गुरुवर्ण का लघुवत् उच्चारण—'करत जो वन सुर नर मुनि भावन'
यहां 'जो' का उच्चारण 'जु' के सदृश
है अतएव 'जो' लघु माना गया

लघुवर्ण का गुरुवत् उच्चारण—'लीला तुम्हारी अति ही विचित्र'
यहां 'त्र' गुरु माना गया देखो
नियम १२।

१४ गुरुवर्ण की दो मात्रा और लघुवर्ण की एक मात्रा मानी जाती है जैसे–

SSSI		SI	
सीताराम	७ मात्रा	राम	३ मात्रा
SISI		SI	
रामचंद्र	६ मात्रा	चित्र	३ मात्रा
SSS		SI	
सयोगी	६ मात्रा	सत्य	३ मात्रा
SSI		SI	
सिंगार	५ मात्रा	धन्य	३ मात्रा
SSI		SI	
नाटक	५ मात्रा	धान्य	३ मात्रा
SI		SI	
दुःख	३ मात्रा	कार्य	३ मात्रा
IS		II	
रमा	३ मात्रा	रम	२ मात्रा
S		II	
वत्	२ मात्रा	सुख	२ मात्रा

१५ छंद दो प्रकार के है १ वैदिक और २ लौकिक। इस ग्रंथ में केवल लौकिक छंदों का वर्णन है, लौकिक छंदों के मुख्य दो भेद है १ मात्रिक वा जाति २ वर्णिक वा वृत्त।

१६ साधारण तया छंदके चार चार पद, पाद वा चरण होते है।

१७ जिस छंद के चारों चरणों में एक समान मात्रा हों परंतु वर्णक्रम एकसा न हो वही मात्रिक छद है।

१८ जिस छंद के चारों चरणों में वर्णक्रम एकसा हो और उनकी संख्या भी समान हो वही वर्णिक वृत्त है।

१६ मात्रिक छंद और वर्णिक वृत्त की पहिचान का यह दोहा स्मरण रखिये

वर्णनि को क्रम एक सो, चहुं चरणनि में जोय।
सोई वर्णिक वृत्त है, अन्य मातरिक होय॥

(मात्रिक छंद)

१ पूरण भरत प्रीति मैं गाई	११ वर्ण	१६ मात्रा
२ मति अनुरूप अनूप सुहाई	१२ वर्ण	१६ मात्रा
३ अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन	१५ वर्ण	१६ मात्रा
४ करत जो बन सुर नर मुनि भावन	१५ वर्ण	१६ मात्रा

चौथे पद में 'जो' को लघु मानो। देखो नियम १३।

(वर्णिक वृत्त)

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

१ ज य रा म स दा सु ख धा म ह रे	१२ वर्ण
२ र घु ना य क सा य क चा प ध रे	१२ वर्ण
३ भ व वा र ण दा रु ण सिं ह प्र भो	१२ वर्ण
४ गु ण सा ग र ना ग र ना थ वि भो	१२ वर्ण

यहा चारों चरणों में वर्णक्रम और वर्ण संख्या एक समान है।

२० सम विषम पदों के संबन्ध से छंदों के तीन तीन भेद होते है।

१ सम—जिसके चारों चरणों के लक्षण एक से हों।

२ अर्द्धसम—जिसके विषम विषम अर्थात् पहिला व तीसरा चरण एक समान हो और सम सम अर्थात् दूसरा व चौथा चरण एक समान हो। जो छंद दो पक्तियों में लिखे जाते हैं उन के प्रत्येक पक्ति को दल कहते है।

३ विषम–जो न सम हो न अर्द्धसम। चार चरणों से अधिक चरण वाले छंदों की गणना भी विषम में है।

२१ सम छंदों के भी दो उपभेद है

मात्रिक में ३२ मात्राओं तक साधारण और ३२ से अधिक मात्रा वाले दंडक छंद कहाते है।

वर्णिक में २६ वर्ण तक साधारण और २६ से अधिक वर्ण वाले दंडक वृत्त कहाते है।

२२ तीन तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं ऐसे गण ८ हैं

नाम गण	रेखारूप	वर्णरूप	उदाहरण	सकेताक्षर	शुभाशुभ
मगण	SSS	मागाना	माधोजी	म	शुभ
नगण	III	नगन	नमन	न	शुभ
भगण	SII	भागन	भावन	भ	शुभ
यगण	ISS	यगाना	यमागी	य	शुभ
जगण	ISI	जगान	जहान	ज	अशुभ
रगण	SIS	रागना	राधिका	र	अशुभ
सगण	IIS	सगना	सनको	स	अशुभ
तगण	SSI	तागान	तातार	त	अशुभ
गुरुवर्ण	S	गा	गा	ग	
लघुवर्ण	I	ल	ल	ल	

सू०–मगण, नगण तो शीघ्र कठस्थ हो जाते हैं, शेष ६ गणों के स्मरण रहने का सब से सुगम रीति यह है कि पिङ्गल की पड्शब्दागायत्रीवत् इस पक्ति को कठस्थ कर लेवे—

'भागन, यगाना, जगान, रागना, सगना, तागान'।

मात्रिक गण	
टगण ६ मात्रावाले	१३
ठगण ५ ,,	८
डगण ४ ,,	५
ढगण ३ ,,	३
णगण २ ,,	२

प्राचीन ग्रंथों में मात्रिक छंदों के लक्षण कहीं२ इन मात्रिक गणों द्वारा भी मिलते हैं, परंतु आजकल इस प्रथा की विशेष आवश्यक्ता न देख कर कविजन केवल सख्या वा सांकेतिक शब्दों द्वाराही अपना इष्ट सपादन कर लेते हैं।

२३ 'मन भय जरसत गल' सहित दश अक्षर इन सोहिं।
सर्व शास्त्र व्यापित लखौ विश्व विष्णु सौं जोहिं॥

'मन भय जरसत गल', ये पिंगल के दशाक्षर कहे जाते हैं।

शुभाशुभगण

२४ 'मन भय' सुखदा, 'जरसत' दुखदा।
अशुभ न धरिये, नर जु बरनिये॥

जगण, रगण, सगण और तगण मात्रिक छंदों के आदि में नहीं आने चाहिये। अभिप्राय यह है कि इन चारों गणों में से किसी गण का एक पूर्ण शब्द न हो यदि तीन वर्णों से अधिक वर्णों का एकही शब्द हो वा तीन वर्णों में दो शब्द हों तो दोष नहीं जैसे—

बखान—यह जगण पूरित शब्द है अतएव आदि में दूषित है।

जहाँ न—यद्यपि यह जगण है परन्तु दो शब्द हैं अतएव दोषरहित है।

कहा, न—यद्यपि यह जगण है परन्तु दो शब्द हैं अतएव दोष रहित है।

रामचन्द्र—एक रगण और एक लघु मिलकर चार वर्णों का एक पूर्ण शब्द है अतएव दोष रहित है और और देववाची भी है।

दग्धाक्षर

२५ दीजो मूलिक छंद के आदि 'झहरभष' कोय ।
दग्धाक्षर के दोष तें छंद दोषयुत होय ॥

दोषपरिहार

२६ मंगल सुरवाचक शब्द गुरु होवे पुनि आदि ।
दग्धाक्षर को दोष नहिं अरु गण दोषहुं वादि ॥

वर्णवृत्त में गणागण का दोष नहीं है क्योंकि वे गणबद्ध है । मात्रिक छंद के आदि में अशुभ गणों का प्रयोग नहीं करना चाहिये क्यों कि वे गणबद्ध नहीं हैं और स्वतंत्र है, दग्धाक्षर लघु होने से दूषित और गुरु होने से निर्दोष है, देवकाव्य, मंगलवाची शब्द, तथा लोक हित संबंधी काव्य में गणागण और दग्धाक्षर का दोष नहीं, दोष केवल नर काव्य में है इस को करे तो सावधानी से करे ।

२७ नरकाव्य में कहीं अशुभ गण पड़ जावे तो उसके आगे एक शुभगण रख देवे इसका विचार नीचे लिखे अनुसार जाने :—

मगण नगण ये मित्र है, भगण यगण ये दास ।
उदासीन जत जानिये, रस रिपु करत विनास ॥

मगण नगण	मित्र+मित्र=सिद्धि मित्र+दास=जय मित्र+उदा=हानि मित्र+रिपु=हानि
भगण यगण	दास+मित्र=सिद्धि दास+दास=हानि दास+उदा=पीड़ा दास+रिपु=पराजय
जगण तगण	उदा+मित्र=अल्पफल उदा+दास=दुःख उदा+उदा=विफल उदा+रिपु=दुःख
रगण सगण	रिपु+मित्र=शून्य रिपु+दास=हानि रिपु+उदा=शंका रिपु+रिपु=नाश

सूचना—यदि मात्रिक छंद के आदिही में अर्थात पहिले तीन वर्णों में शुभगण आजाय तो द्विगण के विचार की आवश्यकता नहीं यदि ऐसा न हो तो आगे के तीन वर्णोंमें इसका विचार कर लेवे।

शब्द और पद ।

२८ विभक्ति सहित शब्द को पद कहते है जैसे—

घर यह शब्द है—घरमें वा घरे यह पद है

जहां२ पदांत मे यति का अर्थात् विश्राम का विधान हो वहां पद पूर्ण होना चाहिये। पद पूरे एक चरण को भी कहते हैं और यति के सबन्ध मे एक चरण में भी अनेक पद होते हैं जहा जिसका ग्रहण हो वहा उसी को लेना चाहिये।

इस ग्रंथ की रचना ही इस प्रकार की है कि उसी से यति भी विदित होती है तथापि सदिग्ध स्थानों में छंदों के नाम के आगे यतिसूचक अंक भी लगा दिये हैं। जहा कोई विधान नहीं वहा यति बहुधा पादांत में वा कवि की इच्छा पर निर्भर है॥

२६- मात्रिक छंदों की वर्ग संज्ञा और संख्या ।

मात्राओं की संख्या	वर्ग संज्ञा	कुल भेद अर्थात् छंद संख्या	मात्राओं की संख्या	वर्ग संज्ञा	कुल भेद अर्थात् छंद संख्या
१	चान्द्र	१	१७	महासंस्कारी	२५८४
२	पाक्षिक	२	१८	पौराणिक	४१८१
३	राम	३	१९	महापौराणिक	६७६५
४	वैदिक	५	२०	महादैशिक	१०९४६
५	याज्ञिक	८	२१	त्रैलोक	१७७११
६	रागी	१३	२२	महारौद्र	२८६५७
७	लौकिक	२१	२३	रौद्रार्क	४६३६८
८	वासव	३४	२४	अवतारी	७५०२५
९	आंक	५५	२५	महावतारी	१२१३९३
१०	दैशिक	८९	२६	महाभागवत	१९६४१८
११	रौद्र	१४४	२७	नाक्षत्रिक	३१७८११
१२	आदित्य	२३३	२८	यौगिक	५१४२२९
१३	भागवत	३७७	२९	महायौगिक	८३२०४०
१४	मानव	६१०	३०	महातैथिक	१३४६२६९
१५	तैथिक	९८७	३१	अश्वावतारी	२१७८३०९
१६	संस्कारी	१५९७	३२	लाक्षणिक	३५२४५७८

३२ मात्राओं से अधिक मात्रा वाले छंद मात्रिक दंडक कहाते हैं इनकी संख्या भी इसी रीति से अर्थात् पिछले दो संख्याओं के योग से निकल सकती है ॥

३०— वर्णवृत्तों की वर्ग संज्ञा और संख्या।

वर्ण	वर्ग संज्ञा	सम्पूर्ण भेद अर्थात् वृत्त संख्या	वर्ण	वर्ग संज्ञा	सम्पूर्ण भेद अर्थात् वृत्त संख्या
१	उक्था	२	१४	शक्वरी	१६३८४
२	अत्युक्था	४	१५	अतिशक्वरी	३२७६८
३	मध्या	८	१६	अष्टि	६५५३६
४	प्रतिष्ठा	१६	१७	अत्यष्टि	१३१०७२
५	सुप्रतिष्ठा	३२	१८	धृति	२६२१४४
६	गायत्री	६४	१९	अतिधृति	५२४२८८
७	उष्णिक्	१२८	२०	कृति	१०४८५७६
८	अनुष्टुप्	२५६	२१	प्रकृति	२०९७१५२
९	बृहती	५१२	२२	आकृति	४१९४३०४
१०	पंक्ति	१०२४	२३	विकृति	८३८८६०८
११	त्रिष्टुप्	२०४८	२४	संकृति	१६७७७२१६
१२	जगती	४०९६	२५	अतिकृति	३३५५४४३२
१३	अति जगती	८१९२	२६	उत्कृति	६७१०८८६४

२६ वर्ण से अधिक वर्ण जिस वृत्त में हों उसे दण्डक कहते हैं उनकी भी संख्या इसी हिसाब से दूनी२ करके निकाल लो।

३१—यह छंदःशास्त्र छन्द महोदधि है इसमें असंख्य रत्न भरे पड़े हैं केवल गुरु पिंगलाचार्य महाराजही इन सब को प्रगट करने में समर्थ हैं। प्रस्तारादि रीति से उनकी संख्या और रूप सिद्धि हो सके हैं। जो छन्द प्रगट हो चुके हैं उनके ये नाम दिये गये हैं। जो छन्द अब तक प्रगट नहीं हुए वे सब 'गाथा' कहे जाते हैं किसी महात्मा द्वारा जब कभी कोई नवीन छन्द प्रगट हुआ तब उसका यह नामकरण भी हो सक्ता है।

अब इसके आगे सांकेतिक और पारिभाषिक शब्दावलि लिखी जाती है ।

३२– शब्दावलि (सांकेतिक)

१ शशि, भू	११ शिव, हर, भव
२ भुज, पक्ष, नैन	१२ रवि, राशि, भूषण, मास
३ गुण, राम, ताप, काल, अग्नि	१३ भागवत, नदी
४ वेद, वर्ण, फल, युग, आश्रम, अवस्था	१४ मनु, विद्या, रत्न, भुवन
	१५ तिथि
५ सर, गति, वन, शिवमुख, कन्या, तत्त्व, प्राण, गण, वर्ग, गव्य	१६ शृंगार, चन्द्रकला
	१८ पुराण, स्मृति
	२० नख
६ शास्त्र, राग, रस, ऋतु, वेदांग, ईति	२५ प्रकृति
	२८ नक्षत्र
७ अश्व, मुनि, लोक, पुरी, वार, स्वर, द्वीप, सिंधु, पाताल, पर्वत	३० मासदिवस
	३२ लक्षण, दंत
	३३ देव
८ वसु, सिद्धि, योग, याम, दिग्गज, अहि, अंग	३६ रागिणी
	४९ पवन
९ भक्ति, निधि, अंक, ग्रह, नाडी, भूखंड, छिद्र, द्रव्य	५६ भाग
	६३ वर्णमाला
१० दिशि, दशा, दोष, अवतार, दिग्पाल	६४ कला

सूचना—इनके पर्याय वाची शब्द भी व्यवहृत होते हैं ।

शब्दावलि (पारिभाषिक)

ल–एक लघु ।	विय–दूसरा
ग–एक गुरु S	गति–विश्राम
लल–दो लघु ।।	विरति–विश्राम
लग–लघु गुरु ।S	कल, कला, मत्ता, मत्त–मात्रा
गल, नर, पौन, ग्वाल-गुरु लघु S।	द्विकल–दो मात्रावाला शब्द जैसे, रा, रम इत्यादि
गग, कर्ण, दो गुरु SS	त्रिकल–तीन मात्रावाला शब्द जैसे रमा, राम, रमण आदि
वलय–तीन लघु ।।।	चौकल–चार मात्रावाला शब्द जैसे रामा, रावण, हलधर,
मुरारि–जगण ।S।	
गंत–गुरु हो अंत में जिसके	
गादि–गुरु हो आदि में जिसके	
भन्ता–भगण हो अंत मे जिसके	
जगन्त–जगण और एक गुरु हो जिसके अंत मे	

३३– उपदेश

प्रिय पाठको! छंद रचना करते समय नियम के अतिरिक्त छंद की ध्वनि अर्थात् लय पर विशेष ध्यान रखिये। चरणांतर्गत जहां जहां यति अर्थात् विश्राम बताये गये है वहां वहां पद पूर्ण होना चाहिये (देखो नियम २८) कविता करो तो ईश्वर वा देशहित संबंधी कीजिये। वर्णिक की अपेक्षा मात्रिक छंदों की रचना विशेष सावधानी से कीजिये और रचना करने के पूर्व श्रीगुरु पिङ्गलाचार्य महाराज का तथा वाग्देवी सरस्वती का स्मरण अवश्य कीजिये, इतिशम् ॥

कार्तिक शुक्लएकादशी,
संवत १९७३
बिलासपुर (मध्यप्रदेश)

जगन्नाथ प्रसाद,
भानु-कवि ।

मात्रिक छंद विषयक सूचना ।

प्रिय पाठको ! इस ग्रंथ में मात्रिक छंदों के लक्षण सूत्रवत् एक एक ही चरण में दिये हैं वे सब लक्षण, नाम सहित स्वयं उदाहरण स्वरूप हैं । चार चरणों में एक छंद पूर्ण होता है । मात्रिक छंद रचते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि चारों चरणों की मात्रिक संख्या एक समान हो, परन्तु उन चरणों का वर्णक्रम एक समान न हो किसी एक वा अधिक चरणों के वर्णक्रम में अंतर अवश्य होना चाहिये । अभिप्राय यह है कि प्रथम चरण में जैसा वर्णक्रम पड़ जावे वैसा शेष तीन चरणों में न रहे यहां तक कि यदि तीन चरणों तक की मात्रिक संख्या और वर्णक्रम एक से हों और किसी एक चरण के ही वर्णक्रम में अंतर पड़ जावे तो भी वह मात्रिक छंद ही माना जायगा । जहां चारों चरणों की मात्रिक संख्या और वर्णक्रम एक से हों वह वर्णिक वृत्त हो जायगा । इसके ज्ञानार्थ सूत्रवत् इस पंक्ति का स्मरण रखिये—

'अक्रममत्ता, सक्रमवृत्ता'

यदि मात्रिक छंद रचते समय कोई छंद ऐसा बन जावे कि जिसके चारों चरणों की मात्रिक संख्या समान हो और वर्णक्रम भी एक समान हो तो उसे मात्रिक छंद न मानकर वर्णिक वृत्त मानो और यदि वर्णिक वृत्तों में उसका कोई विशेष नाम न हो तो मात्रिक छंद में जो उसका नाम है उसी नाम का वर्णिक वृत्त मानो, जैसे तोमर वर्णिक, रोला वर्णिक, सार वर्णिक इत्यादि । नीचे दो उदाहरण दिये जाते हैं—

४ गुपाल (अंत में ।S।)

वसु मुनि कल धरि, सजहु गुपाल।

इसको भुजंगिनी भी कहते हैं ।

५ पुनीत (अंत में SS।)

तिथिकल पुनीत है हे तात ।

इसकी पांचवी मात्रा सदा लघु रहती है।

१६ मात्राओं के छंद

१ पद्धरि (अंत में ।S।)

वसु वसु कल पद्धरि लेहु साज ।

२ पज्झटिका ।

वसु गुरु रसजन है पज्झटिका ।

८+ग+४+ग (जगण का निषेध)

३ अरिल्ल (अंत में ।। वा ।SS)

सोरह जन लल यहो अरिल्ला ।

इसमें जगण का निषेध है ।

४ डिल्ला (अंत में S।।)

वसु वसु भन्ता, डिल्ला जानहु ।

५ सिंह (आदि ।। अंत ।।S)

लल सोरह कल सिंहहिं सरसैं ।

इसी के दूने को कामकला कहते हैं ।

६ चौपाई

सोरह क्रम न 'ज त' न चौपाई ।

इसके नियम निम्न लिखित हैं :—

सू०—अंत में जगण अथवा तगण न पड़ें अर्थात् S। न हों । चौपाई के दो

चरणों को अर्धाली कहते है। चौपाई को रूपचौपाई वा पादाकुलक भी कहते है।

१७ मात्राओं के छंद

१ राम (६, ८ अंत में ।SS)

मनु राम गाये, सुभक्ति सिद्धी।

२ चंद्र।

सत्त सत्रा लहो रुचिर चंद्रै।

इसकी आठवीं मात्रा लघु रहती है।

१८ मात्राओं के छंद

१ राजीवगण।

नो नौ राजीवगण कल धारिये।

इसे माली भी कहते है।

२ शक्ति।

दुली चौगुनी पश्च शक्ती सरन।

इसके अंत में ।।S, S।S, ।।। होता है।

१९ मात्राओं के छंद

१ पीयूष वर्ष (अंत में S।S वा ।S)

दिग्नि निधी पीयूष, वरसत भारि लगा

इसे आनंद वर्धक भी कहते हैं। अंत में रगण या लघुगुरु विशेष रोचक हैं परंतु नगण रहने पर भी दोष नहीं।

२ सुमेरु (१२, ७ वा १०, ९)

रवी के लोकहू रचिये सुमेरु[1]।

३ सगुण (अंत में ।S।)

सगुण पंच चारौं जुगन वंदनीय।

४ नरहरी (१४, ५ अंत में ।।।S)

मनु सरन गहे सब देवा, नरहरी।

५ दिंडी (९, १० अंत SS)

करण भक्ती की दोषहरण दिंडी।

२० मात्राओं के छंद

१ योग (अंत में ।SS)

द्वादश पुनि आठ सुकल, योग सुहायो।

२ शास्त्र (अंत में S।)

मुनी के लोक लहिये शास्त्र आनंद।

३ हंसगति।

शिव सु अंक कलहंस गती भन पिंगल

४ मंजुतिलका (अंत में ।S।)

रच मंजु तिलकाहिं कल, भानु वसु साजि।

१ पाठान्तर-रवी क लोक कहु दस नव सुमेरु।

२१ मात्राओं के छंद

१ प्लवंगम (८, १३)

गादि वसू दिसि, राम जगन्त प्लवंगमै ।

८, १३ पर यति हो । आदि में गुरु और अंत में एक जगण और एक गुरु होना आवश्यक है। इसको अरल भी कहते हैं ।

२ चान्द्रायण (११, १०)

शिव दश कला सुचन्द्र, अयन कवि कीजिये ।

३ तिलोकी ।

सोरह पर कलपंच तिलोकी, जानिये ।

तिलोकी के अंत मे दो पद हरिगीतिका के रखकर कवियों ने उसका नाम अमृतकुंडली माना है ।

४ संत (३, ६, ६, ६)

गुणौ, शास्त्र छहौ, राग सदा, संत भजौ ।

५ भानु (६, १५)

रससानी, बानी भानु राम पद प्रेम ।

२२ मात्राओं के छंद

रास (८, ८, ६ अंत में ।।ऽ)

वसु वसु धारो, पुनि रस सारो, रास रचो ।

२ राधिका ।

तेरा पै सज नव कला, राधिका रानी ।

३ विहारी (८, ६, ८)

द्वै चारै छै, आठ रचो. रास विहारी।

४ कुण्डल (१२, १० अंत में ऽऽ)

भानु राग कर्ण देखि, कुंडल पहिरायो ।

५ उड़ियाना (१२, १० अंत ऽ)

भानु दिशा गंत जहां उड़ियाना कहिये ।

६ सुखदा (१२, १०)

रवि दसहूं दिसि भ्राजे, सब लोकन सुखदा ।

२३ मात्राओं के छंद

१ उपमान (१३, १० अंत ऽऽ)

तेरह दस उपमान रच दै अंतै कर्णा।

२ हीर (६, ६, ११ अंत में ऽ।ऽ)

शास्त्र पढ़ौ, राग कहौ, शंभु भजौ
हीर में ।

३ जग (१०, ८, ५)

दिसि योगै धारे, सुगति मिलैरे,
जग मांझ ।

४ संपदा (११, १२ अंत ।)

शिव आभरण सुधारि, सकल
संपदा सु लेहु ।

२४ मात्राओं के छंद

१ रोला (११, १३)

रोला की चौबीस, कला यति
शंकर तेरा ।

इसे काव्य और काम्य भी कहते है ।

२ दिग्पाल ।

सविता विराज दोई, दिगपाल छंद
सोई ।

रेखता भी इसी ढग का होता है । इसे
मृदुगति भी कहते हैं ।

३ रूपमाला (१४, १० अंत ऽ।)

रत्न दिसि कल रूपमाला, साजिये
सानन्द ।

इसे मदन भी कहते है ।

४ शोभन (१४, १० अंत में |S|)

चौबिस कला विधा दिसा, सजु शोभन साज ।

इसे सिंहिका भी कहते है ।

५ लीला (अंत में ||S)

जहँ भुनि कला, सगुण कुशला, शुन लीलाहिं, भली ।

२५ मात्राओं के छंद

१ गगनानग (अंत S|S)

सोरह नव कल धरि कवि गावहु, गगन अनंगहीं ।

२ मुक्तामणि (अंत SS)

तेरह रवि कल कर्ण सह, मुक्तामणि रचि लीजे ।

३ सुगीतिका (१५, १० अंत में S|)

सुगीतिका तिथि औ दिशा शुभ, गाइये सानंद ।

२६ मात्राओं के छंद

१ शंकर (१६, १० अंत S|)

सोला दोष कला यति कीजे, शंकरे सानन्द ।

२ विष्णुपद (१६, १० अंत ऽ)

सोरह दस कल अन्त गहो भल,
सब तें विष्णु पदे।

३ कामरूप (९, ७, १० अंत में ऽ।)

निधि नगहिं दिसि धरि, कामरूपहिं
साज गल युत मित्त।

इसी का नाम कहीं२ बैताल पाया जाता है।

४ झूलना प्रथम (७, ७, ७, ५ अंत ऽ।)

मुनि राम गुनि, बान युत गल,
झूलन प्रथम, मतिमान।

५ गीतिका-मात्रिक (१४, १२ अंत।ऽ)

रल रविकल धारिकै लग, अंत
रचिये गीतिका।

६ गीता (१४, १२ अंत ऽ।)

कृष्णार्जुन गीता भुवन, रवि सम
प्रगट सानंद।

२७ मात्राओं के छंद

१ सरसी (१६, ११ अंत ऽ।)

सोरा संभु यती गल कीजै, सरसी
छंद सुजान।

इसका दूसरा नाम कबीर और सुमन्दर भी है।

२ शुभगीता (१५, १२ अंत ऽ।ऽ)

सु-धन्य तिथि मासहिं सुपार्थहिं,
कृष्ण शुभ गीता कही।

२८ मात्राओं के छंद

१ सार (१६, १२ अंत में ऽऽ)

सोरह रविकल अन्तै कर्णा, सार
छन्द रच नीको।

सार छंद के अंत में कर्ण अर्थात् दो गुरु विशेष रोचक होते है, दो गुरु से अधिक गुरु होने में भी हानि नही, अंत में एक गुरु अथवा दो लघु रखना मध्यम पक्ष है। मराठी की साकी भी इसी ढग की होती है प्रभाती की चाल इससे मिलती है। सार छंद के अन्य नाम दोवै और ललितपद हैं।

२ हरिगीतिका (१६, १२ अंत ।ऽ) जगण वर्जित

श्रृंगार भूषण अंत लग जन, गाइये
हरिगीतिका।

३ विधाता (१४, १४)

लहौ विद्या लहौ रखै, लहौ रचना
विधाता की।

इसकी १ली, ८वीं और १५वी मात्रा सदा लघु रहती है। इसे शुद्धगा भी कहते है।

४ विद्या (१४, १४ आदि में ।, अंत में ।SS)

लहो मीत सदा सत्संग, जग विद्या रत्न जु पायो ।

२९ मात्राओं के छंद

१ चुलियाला (१३, १६)

तेरह सोरह मत्त धरि, चुलियाला रचि-छंद जु लो चित ।

सूचना—दोहे पर ५ मात्रा अधिक हों ।

२ मरहटा (१०, ८, ११ अंत ऽ।)

दिसि वसु शिव यति धरि, अन्त ग्वाल करि, रचिय मरहटा छंद ।

३ मरहटा माधवी (११, ८, १० अंत ।S)

शिव वसु दिसि जहँ कला, लगै अति भला, मरहटा माधवी ।

३० मात्राओं के छंद

१ चवपैया (१०, ८, १२ अंत S)

दिसि वसु रवि मत्तन, धरि प्रतिपद्दन, गुरु अंतहिं चवपैया ।

२ ताटङ्क (१६, १४ अंत में SSS)

सोरह रत्न कला प्रतिपादहिं, है ताटंके मो अंते।

सूचना—लावनीभी इसी धज पर गाई जाती है। लावनी के अंत में गुरु लघु का कोई विशेष नियम नहीं है।

३ कुकुभ (१६, १४ अंत में SS)

सोरह रत्न कला प्रतिपादै, कुकुभा अंतै दै-कर्णा।

४ रुचिरा (१४, १६ अंत में S) जगण वर्जित

मत्त धरौ मनु और कला, जन गंत सुधारि रचौ रुचिरा।

५ शोकहर (८, ८, ८, ६ अंत में S)

वसु गुन साजिये, पुनि रस धरिये, अंत गुरू पद, शोकहरं।

८, ८, ८ और ६ पर विश्राम है। अंत में गुरु हो इसे शुभंगी भी कहते हैं।

६ सारथी (६, १२, १२ अंत में SS)

रस रंजित, भूषण भानु सारथी, अंतै कर्णा साजो।

३१ मात्राओं के छंद ।

१ वीर (१६, १५ अंत ऽ।)

वसु वसु तिथि सानन्द सवैया, यारो
वीर पंवारो गाव ।

चौपाई और चौपई मिलकर यह छंद सिद्ध होता है, आल्हा की चाल भी यही है ।

३२ मात्राओं के छंद ।

१ त्रिभंगी ।

दस वसु वसु संगी, जन रस रंगी, छंद
त्रिभंगी, गन्त भलो ।

१०, ८, ८ और ६ पर विश्राम है। जगण का निषेध है। अंत में गुरु होता है। चौपाई छंद के अंत में एक त्रिभंगी छंद रखकर कवियों ने उसका नाम हुल्लास रखा है ।

२ पद्मावती ।

दस वसु मनु मत्तन, पै विरती जन, दे
पद्मावति इक कर्णा ।

१०, ८, १४ पर विश्राम है। जगण का निषेध है अंत में दो गुरु हैं ।

३ समान सवैया ।

सोरह सोरह मत्त धरहुजू, छन्द समान सवैया सोभत ।

१६, १६ पर यति है । अंत में भगण हो । यह छंद चौपाई का दूना होता है । इसे सवाई भी कहते है ।

४ दण्डकला ।

दस वसु त्रिया पै, बुध विरती दै, अन्त सगन जन दण्डकला ।

१०, ८ और १४ पर विश्राम है । अंत में सगण हो । जगण निषेधित है । यही छंद यदि यगणान्त हो तो लीलावती कहायगा ।

५ दुर्मिल ।

दस वसु मनु कलमों, गुरु द्वै पद सों, जन दुर्मिल सबहीं भायो ।

१०, ८ और १४ पर विश्राम है । आदि में जगण का निषेध है । अंत में एक सगण और दो गुरु मधुर होते हैं ।

६ खरारी (८, ६, ८, १०)

द्वै चारै छै, आठ दसै, मत्त सजाओ, लै नाम खरारी ।

॥ इति मात्रिक समछंदांसि ॥

अथ मात्रिक दण्डकाः ।

सू०—३२ से अधिक मात्रा वाले छंद दण्डक कहाते हैं ।

३७ मात्राओं के छंद

१ करखा ।

धरि मुनि तीसै, वसु भानु वसु अंक
यति, यों रचहु छंद, करखा सुधारी ।

८, १२, ८ और ९ पर विश्राम है । अंत में यगण हो ।

२ हंसाल ।

बीसै सत्रह यति धरि नि संक रचौ, सबै
यह छंद हंसाल भायो ।

२०, १७ पर यति है । अंत में यगण हो ।

३ द्वितीय झूलना ।

दोष गुण देखिये, लोक मत लेखिये,
गति दूजी लहियंत, झूलना यो ।

१०, १०, १० और ७ पर विश्राम है । अंत में यगण हो ।

४ तृतीय झूलना ।

तीन दस झूलना, अंत मुनि भूलना, दोय
पद तीसरो भेद भायो ।

इसके दो ही पद होते हैं ।

४० मात्राओं के छंद

१ मदनहर।

दस वसु मनु यामा, गंत ललामा, आदि
लला दै मंजु गहौ, पद मदन हरै।

१०, ८, १४ और ८ पर विश्राम है। आदि में दो लघु और अंत में एक गुरु है। इसे मदनगृह भी कहते है।

२ उद्धत।

दस दस दस दस कल, पुनि अंत धरौ गल,
मन राखि अचंचल, साज उद्धत छंद।

१०, १०, १० और १० पर विश्राम है। अंत में गुरु लघु हो।

३ शुभग।

दुइ नख धरहु सत्त, कह पिंगल जु सत्त,
यति दोष गुनि तत्त, शुभगै रचौ मित्त।

१०, १०, १० और १० पर यति है। अंत में तगण हो।

४ विजया।

दिसन चहुं छारही, किरति विजया मही,
दनुज कुल घालही, जनन कुल पालही।

इसमें दस दस मात्राओं का चार समूह होता है। अन्त में रगण हो।

४६ मात्राओं के छंद

१ हरिप्रिया ।

सूरज गुन दिसि सजाय, अंतै गुरु
चरण ध्याय, चित्त दै हरिप्रियाहिं
कृष्ण कृष्ण गावो ।

१२, १२, १२ और १० पर विश्राम है ।
अंत में गुरु हो ।

॥ इति मात्रिक दंडका ॥

अथ मात्रिकार्द्धसमछंदांसि ।

सूचना—विषम अर्थात् पहला और तीसरा पद,
सम अर्थात् दूसरा और चौथा पद ।

चारों पद मिलकर ३८ मात्राओं के छंद

१ बरवै ।

विषमनि रविकल बरवै, सम मुनि साज।

विषम पद में १२ और सम पद में ७ मात्राएँ होती है । अन्त में जगण रोचक होता है ।

२ मोहिनी ।

सुकल मोहिनी बारा, सम मुनि लसै ।

विषम पद में १२ और सम पद में १२ मात्राएँ होती है ।

चारों पद मिलकर ४२ मात्राओं के छंद

१ अति बरवै ।

विषमनि रवि अति बरवै, समकल निधि साज ।

इसके विषम पद में १२ और सम पद में ९ मात्राएँ होती हैं ।

चारों पद मिलकर ४८ मात्राओं के छंद

१ दोहा ।

जा न विषम तेरा कला, सम शिव दोहा मूल ।

विषम चरणों में १३ और सम चरणों में ११ मात्राएँ होती है । पहले और तीसरे चरण

के आदि में जगण नहीं होना चाहिये। अंत में लघु हो। जिस दोहे के आदि में जगण पूरित शब्द हो वह दोहा चांडालिनी कहाता है, बखान, कमान इत्यादिक जगण पूरित शब्द है।

२ सोरठा।

सम तेरा विषमेश, दोहा उलटे सोरठा।

सम चरणोंमें १३ और विषम चरणों मे ११ मात्राएँ होती है। दोहे का उलटा सोरठा है।

चारों पद मिलकर ५२ मात्राओं के छंद

१ दोही।

विषमनि पंद्रा साजो कला, सम शिव दोही मूल।

विषम चरणों में १५ और सम चरणों में ११ मात्राएँ होती है। अंत में लघु हो।

चारों पद मिलकर ५४ मात्राओं के छंद

१ हरिपद।

विषम हरीपद कीजिय सोरह, सम शिव दै सानन्द।

विषम चरणों में १६ और सम चरणों में ११ मात्राएँ होती है। अंत में गुरु लघु होते है।

चारों पद मिलकर ५६ मात्राओं के छंद

१ उल्लाल ।

विषमनि पन्द्रह धरिये कला, सम तेरा उल्लाल कर ।

विषम चरणों में १५ और सम चरणों में १३ मात्राएँ होती है ।

सू०—१३ और १३ मात्राओं का भी उल्लाला छंद होता है ।

चारों पद मिलकर ६० मात्राओं के छंद

१ रुचिरा (द्वितीय) अंत SS

विषम चरण कल धारहु सोला, रुचिरा विय सम मनु कर्णा ।

विषम चरणों में १६ और सम चरणों में १४ मात्राएँ होती है ।

चारों पद मिलकर ६२ मात्राओं के छंद

१ धत्ता ।

दीजे धत्ता इकतिस मत्ता द्वै, नौ तेरा अन्तहिं नगन ।

विषम चरणों में १८ और सम चरणों में १३ मात्राएँ होती हैं । अंत में तीन लघु होते हैं ।

२ धत्तानन्द ।

इकतिस मत्तानन्द, धत्तानन्द, शंकर
मुनि तेरह वलय ।

११, ७ और १३ के विश्राम से प्रत्येक पंक्ति में ३१ मात्राएँ होती हैं । अंत में तीन लघु होते है ।

॥ इति मात्रिकार्द्धसमछंदासि ॥

अथ मात्रिक-विषम छंदांसि ।

चारों पद मिलकर ५७ मात्राओं के छंद

१ लक्ष्मी या बुद्धि ।

प्रथम दलहिं मत्ताधर तीसै, दूजे पुरान
नौ रूरो । दैं बुद्धी लक्ष्मीनाथा, ग्रंथै
मैं करौं पूरो ॥

इसके प्रथम दल में ३० और दूसरे दल में २७ मात्राएँ होती हैं ।

चारों पद मिलकर ६२ मात्राओं के छंद

१ गाहिनी ।

आदौ बारा मत्ता, दूजे द्वै नौ सजाय
मोद लहौ । तीजे भानू कीजे, चौथे
बीसे जु गाहिनी सुकवि कहो ।

पहले दल में १२+१८ और दूसरे दल में १२+२० मात्रा होती है । अन्त में गुरु होता है । बीस बीस मात्राओं के पीछे एक जगण होता है ।

१ सिंहनी ।

आदौ बारा मत्ता, कल धरि बीस जु
सुगंत दूजे चरना । तीजे प्रथमे जैसे,
सिंहनि दस वसु चतुर्थ पद धरना ।

पहले दल में १२+२० और दूसरे दल में

१२+१८ मात्राएँ होती हैं। २० मात्राओं के पीछे एक जगण रहता है। अन्त में गुरु होता है।

६ पद मिलकर १४४ मात्राओं के छंद

१ अमृतधुनि ।

अमृतधुनि दोहा प्रथम, चौविस कल सानन्द । आदि अन्त पद एक धरि, स्वच्छचित रच छंद । स्वच्छचित रच छंदद्ध्वनि लखि पद्दलि धरि । साजज्जमक तिवाज ज्झमक सुजामम्मद्धरि ॥ पद्द्धरि सिर विद्वज्जन कर युद्धद्ध्वनि गुनि । चितत्थिर करि सुच्छिद्धरि कह यो अम्मृत धुनि ।

२ कुंडलिया ।

दोहा रोला जोरिकै, छै पद चौविस मत्त । आदि अन्त पद एक सो, कर कुंडलिया सत्त । कर कुंडलिया सत्त, मत्त पिंगल धरि ध्याना । कवि जन वाणी सत्त, करै सब को कल्याना । कह पिंगल को

दास, नाथ जू मो तन जोहा। छन्द-
प्रभाकर माँहिं, लसैं रोला अरु दोहा॥
अंत पद को फिर आदि में लाना सिंहा-
वलोकन कहाता है। तीसरे पद को देखो।

६ पद मिलकर १४८ मात्राओं के छंद

छप्पय।

रोला के पद चार, मत्त चौबीस धारिये।
उल्लाला पद दोय, अंत मांही सु धारिये।
कहुँ अट्ठाइस होइँ, मत्त छब्बिस कहुँ
देखौ। छप्पय के सब भेद, मीत इक-
हत्तर लेखौ। लघु गुरु के क्रम ते भये,
बानी कवि मंगल करन। प्रगट कबित
की रीति भल, भानु भये पिंगल सरन।

॥ इति मात्रिक विषम छंदांसि ॥

मात्रिकार्द्धसम वा विषमांतर्गत आर्य्या ।

आर्या में चार मात्रा के समूह को गण कहते है । यथा-

१	SS	७ गण और १ गुरु से आर्य्या का पूर्वार्द्ध बनता
२	IIS	है । विषम गणों मे जगण नहीं होता, ६ वा
३	ISI	गण जगण हो अथवा चार लघु हो, जिसके
४	SII	उत्तरार्द्ध में २७ मात्रा ही होती हैं वहा छटवा
५	IIII	गण एक लघु का ही मान लिया जाता है ।

आर्य्या ।

आदो तीजे बारा, दूजे नौ नौ कलान
को जु धरौ। चौथे तिथि आर्य्या सो,
विषम गणै जन सुगंत करो ॥

विषम गणों में जगण का निषेध है। इसके मुख्य पाच भेद है । यथा—

नाम	मात्रा				जोग
	पद १	पद २	पद ३	पद ४	
आर्या	१२	१८	१२	१५	५७
गीति	१२	१८	१२	१८	६०
उपगीति	१२	१५	१२	१५	५४
उद्गीति	१२	१५	१२	१८	५७
आर्यागीति	१२	२०	१२	२०	६४

आर्या की चाल बहुधा सस्कृत और मराठी भाषा मे है इसलिए पृथक् पृथक् उदाहरण नहीं दिये ।

गीति के अत में दो दो मात्रा अधिक रखने पर आर्य्या गीति सिद्ध होती है।

॥ इति मात्रिक छंद वर्णननाम प्रथमोऽध्याय ॥

वर्णवृत्त विषयक सूचना।

वर्णवृत्तों के लक्षण और नाम सूत्रवत् प्रायः एक एक ही चरण में उदाहरण स्वरूप लिखे गये हैं इन्हीं नियमानुसार चार चरणों में एक वृत्त पूर्ण होता है। वर्णवृत्तों के लक्षणों अर्थात् नियमों को समझने के लिये इस बात को ध्यान में रखना चाहिये कि पिंगल के दशाक्षर 'मनभयजरसतगल' हैं इन्हीं अक्षरों द्वारा जहां जिनकी आवश्यक्ता है सारावली निर्म्मित की गई है। इन दशाक्षरों के अंत में 'ग' और 'ल' हैं सारावली में भी इसी नियम का पालन हुआ है अर्थात् जहां कहीं 'ग' व 'ल' मिलें वहीं तक लक्षण का अंत समझना चाहिये। 'ग' वा 'ल' के पश्चात् यदि कोई अक्षर 'मनभयजर सत' मेंसे पुनः आवें तो वे गणसूचक नहीं हैं क्योंकि अंत 'ग' वा 'ल' तकही है हां कहीं२ संख्यासूचक ये अक्षर पुनः आगये हैं जैसे—रात्रि=रगण तीन, जतीन=जगण तीन इत्यादि इसके स्पष्टीकरणार्थ प्रत्येक वृत्त के नाम के आगे गणाक्षर भी लिख दिये गये हैं।

वर्णवृत्तों के चारों चरणों में वर्णक्रम सदा एकसा रहता है यदि किसी चरण में यह नियम भंग हुआ दीख पड़े परंतु मात्रिक संख्या एकसी हो तो वह मात्रिक छंद माना जायगा, यदि मात्रिक छंदों में उसका कोई विशेष नाम न मिले तो वर्णिक वृत्तों में जो उसका नाम है उसी नामका उसे मात्रिक छंद समझना चाहिये जैसे—भुजंगप्रयात मात्रिक, कुसुम

गिचित्रा मात्रिक, चंपकमाला मात्रिक इत्यादि । नीचे एक उदाहरण दिया जाता है :—

चंपकमाला वर्णिक

ऽ । ।ऽ ऽ ऽ।।ऽऽ	वर्ण	मात्रा
भूमि सगो ना मान वृथाहीं	१०	१६
कृष्ण सगो है या जग माहीं	१०	१६
ताहि रिझैये ज्यों ब्रजबाला	१०	१६
डारि गरे में चंपक माला	१०	१६

चंपकमाला मात्रिक

	वर्ण	मात्रा
भूमि सगो मत मान वृथाहीं	११	१६
कृष्ण सगो है या जग माहीं	१०	१६
ताहि रिझैये ज्यों ब्रजबाला	१०	१६
डारि गरे में चंपक माला	१०	१६



अथ सम वृत्तानि ।

१ वर्ण का वृत्त

१ श्री (ग)

गो । श्री ।

ये दो चरण हुए ।

२ वर्णों के वृत्त

१ कामा (ग ग)

गंगा । कामा ।

ये दो चरण हुए, इस वृत्त को स्त्री भी कहते है ।

२ सार (ग ल)

ग्वाल । सार ।

ये दो चरण हुए ।

३ मही (ल ग)

लगी । मही ।

ये दो चरण हुए ।

४ मधु (ल ल)

लघु । मधु ।

ये दो चरण हुए ।

३ वर्णों के वृत्त

१ नारी (म)

सो नारी ।

यह एक चरण हुआ । इसे ताली भी कहतेहै ।

२ शशी (य)

यही तो । शशी है

ये दो चरण हुए ।

३ प्रिया (र)

री प्रिया ।

यह एक चरण हुआ इसे मृगी भी कहते है ।

४ रमण (स)

सुखदा । रमणा ।

ये दो चरण हुए ।

५ पंचाल (त)

तू वीर । पंचाल ।

ये दो चरण हुए ।

६ मृगेन्द्र (ज)

जु एक । मृगेन्द्र ।

ये दो चरण हुए ।

७ मंदर (भ)

भूधर । मंदर ।

ये दो चरण हुए ।

८ कमल (न)

नवल । कमल ।

ये दो चरण हुए ।

४ वर्णों के वृत्त

१ कन्या (म ग)

मांगे-कन्या ।

इसे तीर्णा[1] भी कहते हैं।

२ क्रीडा (य ग)

युगी-क्रीड़ा ।

इसी के दुगुने वा चौगुने को शुद्धगा वृत्त कहते हैं।

३ रंगी (र ग)

राग-रंगी ।

४ देवी (स ग)

सग देवी ।

इसे रमा भी कहतेहैं।

५ धरा (त ग)

तुंगा-धरा[2] ।

६ सुधी (ज ग)

जगे-सुधी ।

७ कला (भ ग)

भाग-कला ।

८ सती (न ग)

नग-सती ।

इसे तरणिजा भी कहते हैं।

९ तारा (म ल)

तारा-मूल ।

१० उपा (य ल)

उपा यालि ।

इसे मुद्रा भी कहतेहैं।

११ धारि (र ल)

राल-धारि ।

१२ पुंज (स ल)

सिल पुंज ।

१३ कृष्णा (त ल)

कृष्णा तुल ।

१४ हग (ज ल)

हग-जल ।

१५ निसि (भ ल)

भूल निसि ।

१६ हरि (न ल)

नल हरि ।

५ वर्णों के वृत्त

१ सम्मोहा (म ग ग)

मां गंगा कासी ।
सम्मोहा नासी ।

ये दो चरण हुए।

२ रती (स ल ग)

सुलगे-रती ।

---

[1] मही । [2] पृथ्वी ।

३ नायक (स क ल)

सुललायक ।

वहिनायक ।

ये दो चरण हुए ।

४ हारी (त ग ग)

तो गो गुहारी ।

इसे हारीत भी कहते हैं ।

५ यशोदा (ज ग ग)

'जगौ गुपाला ।

कहै यशोदा ।

ये दो चरण हुए ।

६ पंक्ती (भ ग ग)

"भा ग ग' पंक्ती ।

इसे हंस भी कहते हैं।

७ करता (न ल म)

नलगु मता ।

भजु करता ।

ये दो चरण हुए ।

८ यमक (न ल ल)

'न ल ल' जहँ ।

यमक तहँ ।

ये दो चरण हुए ।

६ वर्णों के वृत्त

१ विद्युल्लेखा (म म)[१]

मो में-विद्युल्लेखा ।

इसे शेष राज भी कहते हैं ।

२ सोमराजी (य य)

यथू-सोमराजी ।

इसे शखनारी भी कहते हैं ।

३ विमोहा (र र)

क्यौं विमोहा-ररौ ।

इसे विज्जोहा भी कहते हैं ।

४ तिलका (स स)

ससि को तिलका ।

इसे तिल्लना भी कहते हैं ।

५ मन्थान (त त)

तत्ताहि मंथान ।

६ तनुमध्या (त य)

तोये तनुमध्या ।

इसे चौरस भी कहते हैं ।

७ वसुमती (त स)

तोसी-वसुमती ।

१ मेधान्ध ।

८ मालती (ज ज)

जु जोहि न अन्य।

सु मालति धन्य।

ये दो चरण हुए।

९ अपरभा (ज स)

जसै अपरभा।

१० अम्बा (भ म)

भूमिहि है अम्बा।

११ शशिवदना (न य)

शशिवदना 'न्या'।

७ वर्णों के वृत्त

१ शिष्या (म म ग)

माँ मांगे है ये शिष्या।

इसे शीर्षरूपक भी कहते हैं।

२ मदलेखा (म स ग)

मो संगी-मदलेखा।

३ समानिका (र ज ग)

रोजगा-समानिका।

४ हंसमाला (स र ग)

सुर-गा-हंसमाला।

५ भक्ती (त य ग)

तो योगहि में भक्ती।

६ सूर (त म ल)

तो मोल-जाने सूर।

७ कुमारललिता (ज स ग)

जु संग अवला है।

कुमार ललिता है।

ये दो चरण हुए।

८ लीला (भ त ग)

भूतगि-लीलालखौ।[1]

९ तपी (भ भ ग)

भो भगवान तपी।

१० सुवासन (न ज ल)

नजल-सुवासन।

इसे सुवास भी कहते हैं।

११ करहंस (न स ल)

न सिल-करहंस।

१२ मधुमती (न न ग)

न नग-मधुमती।

८ वर्णों के वृत्त

१ विद्युन्माला (ममगग)४,४

मोमें गंगा विद्युन्माला।

इसी के दुगुने को रूपा कहते हैं।

२ वापी (म य ग ल) ४, ४

मांयागैल, वापी सोह।

३ लक्ष्मी (र र ग ल)

रेरे रँगीली सुलक्ष्मीहि।

१ भृंगि—भ्रमणकर।

४ मल्लिका (र ज ग ल)

राजगैल मल्लिकानि[1]।

५ वितान (स भ ग ग)

सुभगंगाहि विताना।

६ ईश (म ज ग ग)

साजि गंग ईश ध्यावौ।

७ नराचिका (त र ल ग)

तोरी लगे नराचिका।

८ रामा (त य ल ल)

तू या लालि रामा कहु।

९ प्रमाणिका (ज र ल ग)

जरा लगा-प्रमाणिका।

इसे नगस्वरूपिणी भी कहते है।

१० विपुला (भ र ल ल) ४, ४

हे विपुला[2]-भरी ललि।

११ चित्रपदा (भ भ ग ग)

चित्रपदा 'भ भ गा गा'।

१२ माणवक (भ त ल ग) ४, ४

भूतल गो माणवक।

१३ तुंग (न न ग ग)

न नग गुनहु तुंगा।

इसे तुरंगम भी कहते है।

१ चमेली। २ पृथ्वी।

१४ गजगती (न भ ल ग)

न भल गा गजगती।

१५ पद्म (न स ल ग)

निसि लगत पद्म हूं।

१६ श्लोक अनुष्टप्

जामें पंचल पट् गुरू, सतौला सम पाद -को। श्लोक अनुष्टपे सोई, नेम ना जहँ आनको।

९ वर्णों के वृत्त।

१ रलका (म स स)

मो सों संकित है रलका।

इसे रत्नकरा भी कहते है।

२ पाईता (म भ स)

पाईता है जहँ 'म भ सा'।

इसे पवित्रा और पादाताली भी कहते हैं।

३ हलमुखी (र न स) ३, ६

रैन सी, वह हलमुखी।

४ महालक्ष्मी (र र र)

रात्रि ध्यावो महालच्छमी।

५ भद्रिका (र न र)

रैन रंध्र नहिं भद्रिका।

---

१ स्तुति। २ हरिण।

६ भुजंगसंगता (स ज र)

सजरी-भुजंग संगता।

७ भुवाल (ज य य)

जियै यह नीको भुवाला।

८ मणिमध्या (भ म स)

है मणिमध्या भूमिसही।

९ शुभोदर (भ भ भ)

भो गुण-वंत शुभोदर।

१० निवास (भ य य)

भाय यह तेरो निवासा।

११ सारंगिक (न य स)

नय सुख सारंगिक है।

१२ बिम्ब (न स य)

न सिय-प्रतिबिम्ब पैये।

१३ रतिपद (न न स)

न निसि-रति पद सजौ।

इसे कमला भी कहते हैं।

१४ कामना (न त र) ६, ३

नतरु ही जान, कामना।

१५ भुजगशिशुसुता (न न म) ७, २

भुजगशिशुसुता, न्नौमी।

१६ अमी (न ज य)

निज यश गान अमी सो।

१७ श्याम (न य य)

नंय यहि श्यामे रिझैये ।

१० वर्णों के वृत्त ।

१ पणव (म न य ग) ५, ५

मानो ये गति, पणवै नीकी ।

२ हंसी (म भ न ग)

जानो हंसी 'म भ न ग' जहां ।

३ शुद्धविराट (म स ज ग)

मो सों जोग-विराट धारिये ।

४ मत्ता (म भ स ग) ४, ६

मो भा संगा, ब्रज तिय मत्ता ।

५ मयूरी (र ज र ग)

रोज रंग सों नचै मयूरी ।

इसे मयूर सारिणी भी कहते है ।

६ कामदा (र य ज ग) ५, ५

रायजू गहो, मूर्ति कामदा ।

७ बाला (र र र ग)

रोरि रंगे-धरे मंजु बाला ।

८ संयुत (स ज ज ग)

सजि जोग-संयुत जानिये ।

९ कीर्ति (स स स ग)

ससि सी गुन कीर्ति किशोरी ।

१ नीति ।

१० धरणी (त र स ग) ४, ६

तेरी सगी, नहीं धरणी है।

११ सेवा (त र स ल)

सेवा दरिद्र को तिरसूल।

१२ उपस्थिता (त ज ज ग) २, ८

तू जो, जगदंब उपस्थिता।

१३ वामा (त य भ ग) २, ८

तू यों, भगु वामा तैं सरला।

१४ चम्पकमाला (भ म स ग) ५, ५

भूमि सुगंधा, चम्पक माला।

इसे रुक्मवती भी कहते हैं।

१५ सारवती (भ भ भ ग)

भाभि भगी वह सारवती।

इसे हाकली भी कहते हैं।

१६ दीपकमाला (भ म ज ग)

दीपकमाला है "भमौ जगौ"।१

१७ पावक (भ म भ ग)

भीम भगै क्यों जो पावक है।

१८ विंदु (भ भ म ग) ६, ४

विंदु सुधा रस, भाभी मांगै।

१ पाठान्तर—दीपकमाला भूमि जागती। यति स्वेच्छानुकूल कहीं ६, ४ और कहीं ५, ५ पर होती है। किसी एक यति का निर्वाह करना ठीक है।

१९ मनोरमा (न र ज ग) ६, ४

निरुज गोपिका, मनोरमा।

२० त्वरितगति[1] (न ज न ग) ५, ५

नजु नग पै, त्वरितगती।

इसे अमृतगति भी कहते हैं।

११ वर्णों के वृत्त।

१ माली (म म म ग ग) ५, ६

मा मा मा गा गा, साजौ वृत्ते माली।

यदि ८, ३ पर यति हो तो इसी का नाम श्रद्धा होगा। यथा—

मांमो में गंगा की श्रद्धा, वाढ़ैरी।

२ भारती (म म य ल ग) ६, ५

मो-माया लागै ना, भजौ भारती।

३ शालिनी (म त त ग ग) ४, ७

मीता तू गा, गीत हूं शालिनी की।[1]

४ भ्रमरविलसिता (म भ न ल ग) ४, ७

मो भा न लगा, भ्रमर विलसिता।

५ वातोर्म्मि (म भ त ग ग) ४, ७

मो भाती गो, गहि वातोर्म्मि जानो।

वातोर्म्मि और शालिनी के मेल को द्विज कहते है।

६ माता (म न न ग ग) ५, ६

माता प्रेमहिं, मनु नग गावैं।

१ शालिनी और इन्द्रवज्रा के संयोग को मुक्ति कहते हैं। २ पवन तरग।

७ मयतनया (म स न ल ग) ६, ५

सो सों ना लगरी, मय तनया।

८ भुजंगी (य य य ल ग)

य तीनों लगा के भुजंगी रचो।

९ शाली (र त त ग ग) ४, ७

रात तू गा, गीतरे भाग्य शाली।

१० रथोद्धता (र न र ल ग)

है रथोद्धतहि[1] रैन री लगी।

११ स्वागता (र न भ ग ग)

स्वागतार्थ उठ- रे नभ गंगा।

१२ द्रुता (र ज स ल ग) ५, ६

राज सों लगो, बिसरना द्रुता।

१३ श्येनिका (र ज र ल ग)

रे जरा लगी जु काल श्येनिका।

१४ सायक (स भ त ल ग)

सुभ तै ले गुण जो सायक सें।

१५ उपचित्र (स स स ल ग) ६, ५

उपचित्र यहै, ससि सो लगो।

१६ हित (स न य ग ग) ५, ६

हितकारिणि, सुनिये गंगा है।

१७ विध्वंक माला (त त त ग ग) ६, ५

तू तात गा गाथ, विध्वंक माला।

इसे श्राहि भी कहते हैं।

१ रथ से उठी हुई धूलि। २ पक्षी विशेष।

१८ इन्द्रवज्रा (त त ज ग ग)

ता ता जगो गोकुल इंद्रवज्रा ।

१९ उपेन्द्रवज्रा (ज त ज ग ग)

जती जगैं गाय उपेन्द्रवज्रा ।

२० उपजाति

उपेन्द्रवज्रा अरु इन्द्रवज्रा ।

दोऊ जहां हैं उपजाति जानो ।

२१ मोटनक (त ज ज ल ग)

है मोटनकाहि तजै जु लगी ।

२२ चपला (त भ ज ल ग)

तू भाजि लोग-लखि है चपला ।

२३ विलासिनी (ज र ज ग ग)

जरा जगौं गुनौं विलासिनी है ।

२४ हारिणी (ज ज ज ल ग)

जतीन लगी-प्रिय ये हरिणी ।

२५ उपस्थित (ज स त ग ग) ६, ५

उपस्थित सदा, जो सोत गंगा ।

इसे शिखंडिन भी कहते हैं ।

२६ अनुकूला (भ त न ग ग) ५, ६

भीति न गंगा, जहँ अनुकूला ।

२७ दोधक (भ भ भ ग ग)

भाभि भगी नहि दोधक नीको ।

---

१ यद्धरा ।

७ मयतनया (म स न ल ग) ६, ५

सो सों ना लगरी, मय तनया ।

८ भुजंगी (य य य ल ग)

य तीनों लगा के भुजंगी रचो ।

९ शाली (र त त ग ग) ४, ७

रात तू गा, गीतरे भाग्य शाली ।

१० रथोद्धता (र न र ल ग)

है रथोद्धतहि रैन री लगी ।

११ स्वागता (र न भ ग ग)

स्वागतार्थ उठ- रे नभ गंगा ।

१२ द्रुता (र ज स ल ग) ५, ६

राज सों लगो, बिसरना द्रुता ।

१३ श्येनिका (र ज र ल ग)

रे जरा लगी जु काल श्येनिका ।

१४ सायक (स भ त ल ग)

सुभ ते ले गुण जो सायक सें ।

१५ उपचित्र (स स स ल ग) ६, ५

उपचित्र यहै, ससि सो लगो ।

१६ हित (स न य ग ग) ५, ६

हितकारिणि, सुनिये गंगा है ।

१७ विध्वंक माला (त त त ग ग) ६, ५

तू तात गा गाथ, विध्वंक माला ।

इसे ग्राहि भी कहते हैं ।

१ रथ से उड़ी हुई धूलि । २ पक्षी विशेष ।

१८ इन्द्रवज्रा (त त ज ग ग)

ता ता जगो गोकुल इंद्रवज्रा।

१९ उपेन्द्रवज्रा (ज त ज ग ग)

जती जगैं गाय उपेन्द्रवज्रा।

२० उपजाति

उपेन्द्रवज्रा अरु इन्द्रवज्रा।
दोऊ जहां हैं उपजाति जानो।

२१ मोटनक (त ज ज ल ग)

है मोटनकाहि तजै जु लगी।

२२ चपला (त भ ज ल ग)

तू भाजि लोग-लखि है चपला।

२३ विलासिनी (ज र ज ग ग)

जरा जगौ गुनौ विलासिनी है।

२४ हारिणी (ज ज ज ल ग)

जतीन लगी-प्रिय ये हरिणी।

२५ उपस्थित (ज स त ग ग) ६, ५

उपस्थित सदा, जो सोत गंगा।
इसे शिखण्डिन भी कहते हैं।

२६ अनुकूला (भ त न ग ग) ५, ६

भीति न गंगा, जहँ अनुकूला।

२७ दोधक (भ भ भ ग ग)

भाभि भगी महि दोधक नीको।

१ षड्क्षरा।

२८ सांद्रपद (भ त न ग ल)

सांद्र पदै-भांतिन गल हार ।

२९ कली (भ भ भ ल ग)

भामि भली गुन चंपक कली ।

३० सुमुखी (न ज ज ल ग)

निज जल मौहिं भरै सुमुखी ।

३१ वृत्ता (न न स ग ग) ४, ७

न! न! सँग, गागिकन हो वृत्ता ।

३२ दमनक (न न न ल ग)

न गुण लगत दमनक है ।

३३ इंदिरा (न र र ल ग) ६, ५,

वदत इंदिरा, नीर री लगा ।

इसे कनकमंजरी भी कहते है ।

३४ अनवसिता (न य भ ग ग)

अनवसिता क्यों-नाय भगैगी ।

३५ सुभद्रिका (न न र ल ग)

न नर लगहि है सुभद्रिका ।

३६ वाधाहारी (न ज य ग ग) ७, ४

निज युग गुंठन, वाधाहारी ।

३७ रथपद (न न स ग ग)

रथपद वहि ननु सो गंगा ।

३८ शिवा (न म य ल ग) ४, ७

पद शिवा, सेवौ न माया लगे ।

१२ वर्णों के वृत्त।

१ विद्याधारी (म म म म)

मैं चारों बंधू गाऊं तौ विद्याधारी।

२ भूमिसुता (म म म स) ८, ४

मो मां मों सों वृत्ते भाखों, भूमिसुता।

३ वैश्वदेवी (म म य य) ५, ७

मो माया या है, वैश्वदेवी अनूपा।

४ जलधरमाला (म भ स म) ४, ८

मो भासे मां, जलधरमाला ये ही।

५ भुजंगप्रयात (य य य य)

यचो-युक्त ताता भुजंग-प्रयाता।

भुजंगप्रयाता को भुजंगप् प्रयाता पढ़ो।

६ शैल (य य य ज)

यंयी याजका क्या करैं जाय शैल।

७ स्रग्विणी (र र र र)

रार री राधिका स्रग्विणी धारना।

८ केहरी (र त म ज)

रात से जे केहरी गर्जत घोर।

९ चंद्रवर्त्म (र न भ स)

चन्द्रवर्त्म लखु है नभसज्ञिता।

१० तोटक (स स स स)

ससि सीस अलंकृत तोटक है।

१ मेधाध्य। २ पुजारी।

११ गिरिधारी (स न य म)

सुनिये सखि गिरिधारी बतियाँ।

१२ प्रमिताक्षरा (स ज स स)

प्रमिताक्षराहि सुजसी सब में।

१३ सारंग (त त त त)

तू तौ तितै-बाल ना छेड़ सारंग।

इसे मैनावली भी कहते है।

१४ वनमाली (त भ त भ)

तू-भा-तभी वनमाली भजै जब।

१५ इंद्रवंशा (त त ज र)

है इन्द्रवंशा जहँ तात जोर है।

१६ मणिमाला (त य त य) ६, ६

तूयौं तय देही, जैसे मणिमाला।

१७ सुरसरि (त न भ स)

छाँडे सुरसरि-तू नभ सुख सों।

१८ ललिता (त भ ज र)

तैं भाजि रंच ललिता न जा कहूं।

१९ गौरी (त ज ज य)

ती जो जय-विश्व चहै भजु गौरी।

२० वाहिनी (त म म य) ७, ५

है वाहिनी है बंधू, तो मो मया ही।

२१ भीम (त भ म ज) ७, ५

तू भीम जुद्ध कला, जानै अनूप।

२२ मोतियदाम (ज ज ज ज)

ऊँचौ-सियराम सु मोतियदाम।

२३ वंशस्थ विलम् (ज त ज र)

सुजान वंशस्थ विल जता जरा।

२४ माधव (ज त ज र+त त ज र)

वंशेंद्र वंशायुत गाव माधवै।१

२५ जलोद्धतगतिः (ज स ज स) ६, ६

जु साज सहिता, जलोद्धतगती।

२६ धारी (ज ज ज य)

जतीन यही नित नेमहिं धारी।

२७ मोदक (भ भ भ भ)

भा चहु वीर न खा मन मोदक।

२८ सौरभ (भ ज म स)

सौरभ पवित्र बहु भो जस सों।

२९ ललना (भ म स स) ५, ७

भाम ससी-क्यों, घूमत री ललना।

३० कांतोत्पीडा (भ म स म)

भौम समा प्यारे, यह कांतोत्पीड़ा।

३१ दान (भ म ज स)

भू सज सुख मान दान सहिता।

१ वंशस्थविल और इंद्रवंशा के मेल से जो वृत्त सिद्ध होता है, उसे माधव कहते हैं।

३२ पवन (भ त न स) ५, ७

भा-तन-सो है, पवनतनय की।

३३ मदनार्ग (भ स न य) ६, ६

भूसन[1] यहि है, अहि मदनारी।

३४ तामरस (न ज ज य)

निज जय काहिन तामरसै सो।

३५ सुंदरी (न भ भ र)

नभ भरी-विधु भासन सुन्दरी।

इसे द्रुतविलंबित भी कहते हैं।

३६ मंदाकिनी (न न र र) ८, ४

न नर रटत काह, मन्दाकिनी।

इसे प्रभा, चंचलाक्षिका और प्रमुदित वदन भी कहते हैं।

३७ ललित (न न म र)

ललित 'ननमरे' श्यामै ध्यावरे।

३८ कुसुमविचित्रा (न य न य) ६, ६

नय नय धारौ, कुसुमविचित्रा।

३९ मालती (न ज ज र) ७, ५

निज जर वंधन, जान मालती।

इसे यमुना भी कहते हैं। यदि ६, ६ पर यति हो तो इसी को 'वरतनु' कहेंगे।

४० पुट (न न म य) ८, ४

'न न म य' पुट कीजे, हे सुजाना।

१ भूषण। २ मदन+अरि=मदनारी=महादेव। ३ कमल, सुन

४१ प्रियंवदा (न भ ज र) ४, ४, ४

न भजु रे, किमि सिया, प्रियंवदा।

४२ द्रुतपद (न भ न य)

द्रुतपद नभनिय बिन सोचे।

४३ नवमालिनी (न ज भ य) ८, ४

पद नवमालिनी हुं, निज भायो।

४४ निवास (न न र ज)

न नर जपत क्यों रमा निवास।

४५ रमेश (न य न ज)

नयन जु देखो चरित रमेश।

४६ उज्वला (न न भ र) ७, ५

न नभ रह सदा, निसि उज्वला।

४७ नभ (न य स स)

नय ससि को दूज लखे नभ में।

४८ श्रीपद (न त ज य) ४, ८

न तजिये, श्रीपद पद्म प्रभू के।

४९ मानस (न य भ स) ६, ६

जहँ नय भासै, मानस कहिये।

५० सुमति (न र न य)

सुमति धारि कै निरनय कीजे।

५१ राधारमण (न न म स)

न नम सुघर क्यों राधारमणा।

५२ वामना (न स ज र)

छल कपट वासना-न साज रे।

५३ (साधु न स त ज) ७, ५

नसति जड़ताधा, संगति साधु।

५४ तारिणी (न स य म)

कहुँ अधम तारिणी ना सिय सी।

५५ तरल नयन (न न न न) ६, ६

नचहु घरिक, तरल नयन।

१३ वर्णों के वृत्त।

१ माया (म त य स ग) ४, ६

माता या सो, गा कछु जोगी किय माया।

इसे मत्तमयूर भी कहते हैं।

२ प्रहर्षिणी (म न ज र ग) ३, १०

मानो जू, रँग महलों प्रहर्षिणी है।

३ कंदुक (य य य य ग)

यचो गाइकै श्यामकी कंदुकी क्रीड़ा।

४ कन्द (य य य य ल)

यचो लाइकै-चित्त आनंद कंदाहि।

५ चंचरीकावली (य म र र ग) ६, ७

यमारि-रागौ क्यों, चंचरीकावली ज्यों।

६ सुरेन्द्र (र म न न ग) ५, ८

सुरेन्द्रे लेखो, यामुन नग जहँवां।

७ राधा (र त म य ग) ८, ५

रेतु माया गोपिनाथा, ध्याय ले राधा।

८ राग (र ज र ज ग)

रे जरा जगौ-सुमीत राग गावरे।

९ तारक (स स स स ग)

ससि सीस गहे स्वइ तारक भारी।

१० मंजुभाषिणी (स ज स ज ग)

सजि साज गौरि वद मंजुभाषिणी।

इसे कनकप्रभा, सुनंदिनी और प्रबोधिता भी कहते हैं।

११ कलहंस (स ज स स ग)

सज सीस गौरि कलहंस गतीसी।

इसे नंदिनी, सिंहनी और कुटजा भी कहते हैं

१२ प्रभावती (त भ स ज ग) ४. ९

ती-भास-जो, गुण सहिता प्रभावती।

१३ त्राता (त य य म ग) ६, ७

तू या यम गावै, नगावै काहे त्राता।

१४ रुचिरा (ज भ स ज ग) ४, ९

जु भास, जी, गहि रुचिरा सँवारिये।

१५ कंजअवलि (भ न ज ज ल)

कंज अवलि खिल-भानुज जो लखि।

इसे पंकजअवलि, पंकावली और पंकावलि भी कहते हैं।

१६ चण्डी (न न स स ग)

न नसु रिगरि भजले नर चण्डी।

१७ चंद्ररेखा (न स र र ग) ६, ७

निसि रुरुगता, जानिये चंद्ररेखा।

१८ चन्द्रिका (न न त त ग) ७, ६

'ननततग' युता, शोभती चंद्रिका।

इसका नाम उत्पलिनी, विद्युत् और कुटिल-गति भी पाया जाता है।

१६ मृगेन्द्रमुख (न ज ज र ग)

परत मृगेन्द्र मुखै-नजाजु रोगी।

२० पुष्पमाला (न न र र ग) ८, ४

न नर रँगहिं मानिये, पुष्पमाला।

२१ क्षमा (न न ज त ग)

ननु[2] जित गरब-साधु धौरें क्षमा।

कहीं२ इसका लक्षण न न त त ग भी कहा है परन्तु देखो १८वां वृत्त चंद्रिका। यति पादांत में है, कोई कोई ७, ६ पर भी रखते हैं।

१४ वर्णों के वृत्त।

१ वासन्ती (म त न म ग ग) ६, ८

माता नौ मैं गंग, सरस राजे वासन्ती।

इसका लक्षण कहीं म त न य ग ग भी देखा जाता है।

२ असम्बाधा (म त न स ग ग) ५, ६

माता नासौगी, गहन भव असम्बाधा।

१ रुरु=हरिणी। २ ननु=निश्चय।

३ मध्यक्षामा (म भ न य ग ग) ४, १०

मो भा नाये, गगरि धरत मध्य क्षामा।

४ लोला (म स म भ ग ग) ७, ७

मॉ! सोमौ भगुगोरी, देखे आनन लोला।

५ चंद्रौरसा (म भ न य ल ग)

मो भौने या लगत सुघर चंद्रौरसा।

६ रेवा (म स त न ग ग)

मॉ सातौ नग गावैं कीरति तुव रेवा।

इसका नाम लक्ष्मी भी पाया जाता है परतु लक्ष्मी नामक अन्य वृत्त भी है।

७ कुटिल (स भ न य ग ग) ४, १०

सुभ नाये, गगन कुटिल ध्यावों रामा।

८ मंजरी (स ज स य ल ग) ५, ६

सजि सीय लै गवनि ज्यों सखी मंजरी।

इसे वसुधा और पथा भी कहते हैं।

९ मनोरम (स स स स ल ल)

ससि सीस लला-अवलोक मनोरम।

१० मगली (स स ज र ल ग) ३, ६, ५

ससि जो, रल गंत होत, वृत्त मगली।

११ प्रतिभा (स भ त न ग ग) ८, ६

प्रतिभा है कवि मांही, सुभ-तन-गंगा।

१ चन्द्र+औरस=बुध।

१२ वसंततिलका (त भ ज ज ग ग) ८, ६

जानो वसंत तिलका, 'तुभजौ जगौ ग'।

इसे उद्धर्षिणी और सिंहोन्नता भी कहते हैं।

१३ मुकुंद (त भ ज ज ग ल) ८, ६

तै भोज जोग लहि के, भजले मुकुन्द।

१४ अनंद (ज र ज र ल ग)

जरा जरा लगाय चित्त ले अनन्द तू।

१५ इन्दुवदना (भ ज स न ग ग)

भौजि सुनु गंग छवि इंदु वदना सी।

१६ चक्र (भ न न न ल ग) ७, ७

चक्रहिं रच कवि, 'भ न न न ल ग' सों।

१७ अपराजिता (न न र स ल ग) ७, ७

न निरस लगली, कथा अपराजिता।

१८ प्रहरणकलिका (न न भ न ल ग) ७, ७

ननु भन लग है, प्रहरण कलिका।[१]

१९ नान्दीमुखी (न न त त ग ग) ७, ७

न नित तगि गहौ, रीति नांदीमुखी की।

२० कुमारी (न ज भ ज ग ग) ८, ६

नजु भज गंग काह, नितही कुमारी।

२१ ललित केसर (न र न र ल ग)

ललित केसरै सखि-नरैन री लगा।[२]

इसका नाम कहीं केसर भी पाया जाता है परन्तु १८ वर्णों के वृत्तों में भी एक वृत्त केसर नामक है।

१ कहीं २ पादांत में यति पाई जाती है। २ भटक कर।

२२ प्रमदा (न ज भ ज ल ग)

नजु भज ले शुविंद किमि तू प्रमदा ।

२३ सुपवित्रा (न४+ग ग) ८, ६

नचहु गगरि धरि, तिय सुपवित्रा ।

२४ नदी (न न त ज ग ग) ७, ७

न ! न ! तजि गगरी, जावहुरी नदी में ।

१५ वर्णों के वृत्त ।

१ सारंगी (म म म म म) ८, ७

मो प्राणों की संगी प्यारी, मीठी बाजे सारंगी ।

इसे काम क्रीड़ा भी कहते हैं । जहां यति पादांत में वा स्वेच्छानुकूल तो वहां इसे लीला खेल कहते हैं ।

२ चित्रा (म म म य य) ८, ७

मे मो माया याही जानो, पार नाहीं विचित्रा ।

३ चन्द्रलेखा (म र म य य) ७, ८

मै री मैया यही तो, ल्यौं चन्द्रलेखा खिलौना ।

४ धाम (म त ज त ज) ५, १०

माताजी-तीजा, व्रत मे पधारौ मम धाम ।

५ चामर (र ज र ज र)

रोज रोज राधिका सु चामरै डुलावही ।

इसे तूण और सोमवल्लरी भी कहते हैं ।

९ सीता (र त म य र)

रे तु माया रंचहूं जानी न सीताराम की।

७ चंद्रकांता (र र म स य) ७, ८

रार मोसों यही है, त्यागें किन चंद्रकांता।

८ मनहंस (स ज ज भ र)

सज जीभरी-मनहंस वृत्तहिं गान कै।

९ एला (स ज न न य) ५, १०

सजनी नयों अपतहिं वितरिय एला[1]।

१० नलिनी (स स म स स)

ससि सीस सखी लखि फूल रहीं नलिनी।

इसे भ्रमरावली और मनहरण भी कहते हैं।

११ ऋषभ (स य स स य) ८, ६

ऋषभै बखानौ जहँ पै, सियसी सिया है।

इस वृत्त का लक्षण 'स ज स स य' भी कहा है।
यथा-ऋषभै बखान जहँ पै, सुजसी सिया है।

१२ मोहिनि (स भ त य स) ७, ८

सुभ तो ये सखिरी, नागरिही मोहिनि है।

इस वृत्त के आदि में कोई कोई रगण का भी प्रयोग करते है।

१३ मगल (स भ त ज य) ७, ८

सुभ तीजा यहतो, मंगल नारि मनावैं।

१४ कुंज (त ज र स र) ८, ७

तू जा-रस रूप पुंज कुंज जहां श्याम-री।

१ एला=इलायची।

१५ निशिपाल (भ ज स न र)

भोज सुन राघवहिं चौस निशिपाल है ।

१६ पावन (भ न ज ज स) ८, ७

भानुज जन्म-कहिये, अति पावन न में ।

१७ भाम (भ म स स स) ६, ६

भाम[1] ससी सो है नभ में, सुख सों नितही।

१८ निश्चल (भ त न म त) ५, ६, ४

निश्चल एका, भितन मतेका, जानो धीर।

१९ दीपक (भ त न त य) १०, ५

दीपक साजें निज घरके, भांतिन-ती-ये ।

२० शशिकला (न न न न स) ६, ६

नचहु-सुघर, तिय मनहुं शशिकला ।

इसे शरभ, चन्द्रवर्त्ता और स्रग भी कहते हैं । यति ८, ७ पर होतो यही वृत्त ' मणिगुण निकर ' कहा जायगा ।

२१ मालिनी (न न म य य) ८, ७

न नमिय यहि काहे, मालिनी[2] मूर्ति धन्या ।

२२ विपिन तिलका (न स न र र) ६, ६

विपिन-तिलका, रचत कौन सी नारी री ।

यति निर्धारित नहीं परन्तु ६, ६ पर ठीक प्रतीत होती है ।

१ भाम=सूर्य । २ वनमाला ।

१७ वर्णों के वृत्त

१ मन्दाक्रांता (म भ न त त ग ग) ४, ६, ७

मन्दाक्रान्ता, म भ न त त गा, गाइये
धीर धीरे।

२ मंजारी (म म भ त य ग ग) ६, ८

मींमीं भांती-या-गा गा कर, घूमै घर
में मंजारी।

३ भाराक्रांता (म भ न र स ल ग) ४, ६, ७

भाराक्रान्ता, म भ न र स ला, गहो
मन लायके।

४ हारिणी (म भ न म य ल ग) ४, ६, ७

मो भौने मॉ, यु ल ग सु भ गा, देवी
मनोहारिणी।

५ शिखरिणी (य म न स भ ल ग) ६, ११

यमी[1] ना-सो भूला, गुण गणनि गागा
शिखरिणी।

६ कांता (य भ न र स ल ग) ४, ६, ७

वहै कांता[2] जहँ लसत हैं, 'यभैनरसा
लगा'।

७ सारिका (स५+ल ग) १०, ७

सुगती लग रामहिं राम, रटै नित
सारिका।

१ यमी=इंद्रिय निग्रह करनेवाला। २ सुन्दर स्त्री।

८ अतिशायिनी (स स ज भ ज ग ग) १०, ७

सु सजे भज गंग क्यों नहीं, तु अति-
शायिनी है।

९ तरंग (स म स म म ग ग ५, ५, ७

शिव के सगा, सोह तरंगा, सीमा
सीमा में गंगा।

१० पृथ्वी (ज स ज स य ल ग) ८, ६

जु साज सिय लै गई, जगत मातु
पृथ्वी सुता।

११ वंशपत्रपतिता (भ र न भ न ल ग) १०, ७

साजिय वंश पत्र पतिता, 'भरनभनलगा'।

१२ शूर (भ म स त य ग ल) ५, ५, ७

भूमि सताये, गाल बजाये, कौन
कहायो शूर।

१३ हरिणी (न स म र स ल ग) ६, ४, ७

न सुमिरि सुली[1], गावौ काहे, वृथा
हरिणी कथा।

१४ मालाधर (न स ज स य ल ग) ६, ८

न-सज-सिय लागि जो न, छिन संत्र
माला धरे।[2]

---

१ सुली=शूली, महादेव। २ किसी ने ८, ९ पर यति मानी है
यथा—न सज सिय लागिना, छिन जु मंत्र माला धरे।

१३ केतकी (स स स ज न र) १०, ८

सखि सों जनु रीझ न रंच, सेवत अलि केतकी।

१४ शारद (त भ र म ज ज) ९, ९

सो शारदा पद जानिये, पटुता भरी म्ज जाहि।

१५ लालसा (त न र र र र) ९, ९

तूनीर चतुर बांधहीं, युद्ध की है जिन्हें लालसा।

१६ अचल (ज त भ य स न) ५, ६, ७

जती भयो सो, तपे अचल पै, त्यागि सबै जंजाल।

१७ हीर (भ स न ज न र) १०, ८

भूसन[2] जनु रंक[1] मुदित, पाय ललित हीरहीं।

१८ तीव्र (भ५+स)

भू गति सोधत पंडित जो वहु तीव्र गणित में।

इसका नाम अश्वगति भी पाया जाता है परन्तु १६ वर्णों के वृत्तों में भी एक वृत्त अश्वगति नामक है।

१ दरिद्र। २ भू-सन=पृथ्वी, म-पाठान्तर भूषण।

१९ भ्रमरपदक (भ र न न न स) ६, १२

भीरु न नैन से, अमर पदक तउ गर परे।

२० नंदन (न ज भ ज र र) ११, ७

न जु भज रोरि-फूल फल सौं, कहा रघूनन्दना।

२१ अनुराग (न ज ज न न ज) ८, १०

निज जनता जँह है, प्रगट तहां ही अनुराग।

२२ प्रज्ञा (न य म य भ म) ६, ४, ८

नय सम भीमा, प्रज्ञा सीमा, ताही ना छिन छांड़ो जू।

२३ लता (न न र ध र र) १०, ८

न निरभर रहे असींचे, वर काव्य की ये लता।

२४ मान (न र म म न म) १०, ८

नर समान मोहन नाहीं, तू मान तज री प्यारी।

२५ नाराच (न न र र र र) ६, ६

न नर चतुर-भूल तू, गाव नाराचधारी सदा।

इसे महामालिका भी कहते हैं।

१९ वर्णों के वृत्त

१ शार्दूल विक्रीड़ितं (म स ज स त त ग) १२, ७

मो सों जे सत-ते-गहें सुरचना, शार्दूल विक्रीड़ितं।

२ फुल्लदाम (म त न स र र ग) ५, ७, ७

मो तो नासौ रे, रँगहु हिय प्रभू, नाम की फुल्लदामै।

३ विम्ब (म त न स त त ग) ५, ७, ७

विम्बा वाही है, म त न स त त गा, युक्ता जहां पाइये।

४ सुमधुरा (म र भ न म न ग) ७, ६, ६

मोरे भौने मनोग्या, वदति रमणी, वाणी सुमधुरा।

५ सुरसा (म र भ न य न ग) ७, ७, ५

मोरे-भे-नाय-नागी, हरि अनुचर हौं, जान सुरसा।

६ मेघविस्फूर्जिता (य म न स र र ग) ६, ६, ७

यमूनासौरी-री, गुनत हुलसे, मेघ विस्फूर्जिता को,

इसे विस्मिता भी कहते हैं।

१ मनोज्ञा। २ मौरि-शौरि-श्रीकृष्ण।

७ छाया (य म न स त त ग) ६, ६, ७

करौ छाया ऐसी, यमुन ससते, गोविंद ही हों पती।

८ मकरंदिका (य म न स ज ज ग) ६, ६, ७

यमें ना साजो जो, गहि कर कियो, वहा मकरंदिका।

९ शम्भू (स त य भ म म ग) ५, ७ ७

सत या भूमी, मग शम्भू ध्यावहु, सिच्छा मोरी मानो जू।

१० तरल (म न य न य न ग) ८, १०

कहु वृत्त तरल ताही, सुनिय नयो नागहि जहां।

११ मणिमाल (स ज ज भ र स ल) १२, ७

सजि जो भरी सुलखात सुंदर, हीय मे मणिमाल।

१२ समुद्रतता (ज स ज स त भ ग) ८, ४, ७

जसी जस लभी गुनो, रहत जो, छायो समुद्रतता।

१० वर्णों के वृत्त

१ सुवदना (म र भ न य भ त ग) ७, ७, ६

मो रंभा नाय, भूलें, गुण गण अगरी, प्यारी सुवदना।

२२ वर्णों के वृत्त

१ हंसी (म म त न न न स ग) ८, १४

मैं सो तो ना नाना सोंग, तज-हरिभज
पिय पय जस हंसी।

२ लालित्य (म स र स त ज न ग) ६, ५, ८

मो सों रोस तजौं नागरी, कहु लालित्ये,
कटु वाक्य परिहरौ।

३ महा स्रग्धरा (स ज त न स र र ग) ८, ७, ७

सज तान सूर रंगी श्रवण सुखद जो,
ये महा स्रग्धरा की।

४ मंदारमाला (त७+ग)

तू लोक गोविंद जावै नरा नाम मंदार
माला हिये धार ले।

५ मदिरा (भ७+ग)

भासत गूढ़न मर्म तिन्हें जु प्रिये जग
मोह मयी मदिरा।

६ मोद (भ५+म स ग)

भे सर में सिगरे गुण अर्जुन द्रौपदि
व्याही लाय समोदा।

७ भद्रक (भ र न र न र न ग) ४, ६, ६, ६

भोर नरा, नरी-नग-भरे, हिये जु सुमिरै,
सुभद्र कहिये।

२३ वर्णों के वृत्त

१ मत्ताक्रीड़ा (म म त न न न न ल ग) ८, ५, १०

मत्ताक्रीड़ा सोई जानो, लसत जहँ,
'मम तननि ननु लग' ही।

२ वागीश्वरी (य७+ल ग)

यचौ राम लागे सदा पाद पद्मे हिये
धारि वागीश्वरी मातको।

३ सुन्दरि (स स भ स त ज ज ल ग) ६, ७, १०

ससि भास तजो, जौं लगि सखि ढूढ़ौं,
सुंदरि हाय कहां बिछुरी।

४ सर्वगामी (त७+ग ग)

तै लोक गंगा, तिहूं ताप भंगा, नमामी
नमामी सदा सर्वगामी।

इसे अग्र भी कहते हैं।

५ सुमुखी (ज७+ल ग)

जु लोक लगी चित राम भजैं तिनपै
सुप्रसन्न सिया सुमुखी।

इसे मानिनी और मल्लिका भी कहते हैं।

६ मत्तगयन्द (भ७+ग ग)

भासत गंग न सो सम मो अघ मत्त
गयंद हिं नास करया।

इसे मालती और इदव भी कहते हैं।

७ चकोर (भ७+ग ल)

भासत ग्वाल-जहाँ लखिये कहि वृत्त चकोर महा मुद मान।

८ अद्रिननया[२] (न ज भ ज भ ज भ ल ग) ११, १२

नजु भज भंजु भाल गाति को, हिमाद्रि तनैया जरा सुमिरले।

इसे अश्वललित भी कहते हैं।

९ शैलसुता (न, ज६+ल ग) १३, १०

नजरसुलोगन ऊपर कीजिय, हे जग तारिणि शैल सुते।

२४ वर्णों के वृत्त

१ गंगोदक (र८)

रे बसौ धाइके अंत कासीहि के धाम निश्चित गंगोदकैं पान के।

इसे गंगाधर, लक्ष्मी और खंजन भी कहते हैं।

२ दुर्मिल (स८)

सब सों-करि नेह भजौ रघुनन्दन दुर्मिल भक्ति सदा लहिये।

इसका नाम कहीं२ चद्रकला भी पाया जाता है।

३ आभार (त८)

तु अष्ट-जामे जपै राम को नाम भूलै न हे तात आजन्म आभार।

[१] अर न भाग। [२] अद्रितनया-पार्वती।

४ मुक्तहरा (ज८)

जु योग बली सुमनो भव मुक्त हरैं शिवजी तिनके दुख दंद।

५ वाम (ज७+य)

जु लोक यथा विधि शुद्ध रहैं हरि वाम तिन्हें सपनेहु कवौं ना।

इसके अन्य नाम मंजरी, मकरंद और माधवी भी हैं।

६ तन्वी (भ त न स भ भ न य) ५, ७, १२

भात न सोभा, भनिय-अशुभ सी, जो नहि सेवत निज पति तन्वी[1]।

७ अरसात (भ७+र)

भा सत रुद्र जु ध्यानिन में तिमि ध्यान धरौ अरसात न नेकहू।

८ किरीट (भ८)

भा वसुधा तल पाप महा हरि जू प्रगटे तव धारि किरीटहिं।

२५ वर्णों के वृत्त

१ सुंदरी (स८+ग)

सबसों गहि पाणि मिले रघुनंदन सुंदरि सीय लगी पद सासू।

इसे मल्ली और सुखदानी भी कहते हैं।

१ पतली कमर वाली स्त्री।

२ अरविंद (स८+ल)

सबसों लघु आपुहिं जानियजू पद
ध्यान धरे हरि के अरविंद।

३ लवंग लता (ज८+ल)

जु योग लवंग लतानि लग्यो तब सूझ
परे न कछू घर बाहिर।

४ क्रौंच (भ म स भ न न न न ग) ५, ५, ८, ७

क्रौंचसुवृत्ता, वाकहँ मानो, भ म स भ
न न न न, गहि जहँ बिलसैं।

२६ वर्णों के वृत्त

१ भुजंग विजृम्भित (म म त न न न र स ल ग) ८, ११, ७

मो मीता नैना नारी सों, लगि मुधिन
गरुड़ लखि ज्यों, भुजंग विजृम्भिता।

२ सुख (स८+ल ल)

सबसों ललुवा मिलिकै रहिये मम
जीवन मूरि सदा सुख दायक।

इति साधारण सम वृत्तानि।

अथ वर्ण दंडकाः।

दंडक छब्बिस तें अधिक, साधारण गण संग।
मुक्तक गिन्ती वरण की, कहुं लघु गुरू प्रसंग॥

२६ से अधिक वर्णवाले वृत्त दंडक कहाते हैं। इनके दो भेद मुख्य हैं। १ साधारण-जो गण बद्ध हैं २ मुक्तक वा मुक्त जो स्वतन्त्र रूप हैं। इनमें केवल वर्णों की गिन्ती का प्रमाण है और कहीं कहीं गुरु लघु का नियम होता है।

अथ साधारण दंडकाः।

१ मत्त मातंग लीलाकर (२६ वा अधिक)

रानि धीरे धरो आज मार्‌यो खरो कंस को
मत्त मातंग लीला करी श्याम ने।

२ कुसुमस्तवक (सद वा अधिक)

सुरसैं गुणवंत पियै नित ज्यों अलि पुंज
सुवृच्छ लता कुसुमस्तवकें।

३ अशोक पुष्प मंजरी (ग ल यथेच्छ)

गौ लिये यथेच्छ या फिरै गुपाल घाट घाट
ज्यों अशोक पुष्पमंजरी मलिंद।

४ अनंग शेखर (ल ग यथेच्छ)

लगा मनै अनंगशेखरै सुकोशलेश पाद वेद
रीति रामहीं विवाहि जानकी दई।

५ शालू (त+नद+ल ग) १४, १५

शालू तन अहि लग सपनहुँ जु न, हरिपद
सर सिज सुमिरण करहीं ।

६ त्रिभंगी (न६+म स भ म स ग) ८, ८, ८, १०

न निसरसन्नि भमि, सगरि लखत सखि, ससि-
वदनी ब्रज की, रंगनरंगी श्याम त्रिभंगी।

अथ मुक्त दंडकाः ।

१ मनहर (कवित्त) १६, १५ अंत गुरु

आठों जाम जोग राग, गुरु पद अनुराग,
भक्ति रस प्याय संत, मनहर लेत है।

कवित्त नियमावली ।

आठ आठ आठ पुनि, सात वरणनि माजि, अंत इक गुरु पद, अवसहिं धरि कै। सम सम सम सम, विषम विषम सम, सम विषमहु होय, प्रति आठ करिकै। होय विषमनि बीच, सम पर राखियेना, राग लय नष्ट होत, अतिही बिगरिकै। हरि पद परिकै जु, सुमति सुधरिकै-सो, रचिये कवित इमि, गुरुहिं सुमिरिकै।

सू०—इसे घनाक्षरी भी कहते हैं।

२ रूपघनाक्षरी (३२ वर्ण १६, १६) अंत लघु

राम राम राम लोक, नाम है अनूप रूप,
घन अच्छरी है भक्ति. भवसिंधु हर जान।

---

१ शालू=मेंढक।

३ डमरू (३२ वर्ण १६, १६) सर्व लघु

हर हर सरस रटत नस मल सव, डम डम
डमरु वजत शिव वम वम।

४ कृपाण (३२ वर्ण ८, ८, ८, ८) अत 'गल'

वर्ण आठ चार वार, अंत 'गल' निरधार,
जुद्ध प्रसंग विचार, वृत्त कहु किरपान।

इस वृत्त के अत में नकार कर्णमधुर होता है।

५ विजया ३२ वर्ण (८, ८, ८, ८) अत 'ल ग'

वरण वसु चारिये, चरण प्रति धारिये,
लगन ना विसारिये, सुविजया सम्हारिये।

६ देव घनाक्षरी (३३ वर्ण ८, ८, ८, ९) अत ल ल ल

राम योग भक्ति भेव, जानि जपै महादेव,
घन अच्छरी सी उठै, दामिनी दमकि दमकि।

इति वर्ण दंडकाः तथा वर्ण वृत्तानि समाप्तानि।

अथ गणित विभागः ।

प्रत्यय ।

सूची पुनि प्रस्तार नष्ट उद्दिष्ट बखानहु ।
पातालहु पुनि मेरु खंड मेरहु पहिचानहु ।
जानि पताका भेद और मर्कटी प्रमानहु ।
नव प्रत्यय ये छंद शास्त्र के हिय महँ आनहु ।
दशम भेद कोउ सूचिकों वरणत है निज बुद्धि बल ।
मर्कटि अंतर्गत स्वरू संख्या लघु गुरु की सकल ॥

प्रत्यय गुणावलि ।

सूची संख्या छंद की मत्त वरन कहि देय । (संख्या)
प्रस्तारहिं सो रूप रचि भिन्न भिन्न लखि लेय॥१॥ (नष्ट रूप)
नष्टहु पूछे भेद को रूप रचै ततकाल । (इष्ट रूप)
कहु उद्दिष्ट-रचि रूप की संख्या भेद रसाल॥२॥ (इष्ट संख्या)
पातालहु लघु गुरु सकल एकत्रित दरसाय (लघु गुरु संख्या एकत्रित)
मेरु खंड विस्तार लग*संख्या छंद लखाय॥३॥ (लघु गुरु छंद संख्या)
सजहु पताका गुरुन के, छन्द भेद अलगाय । (गुरु भेद)
वर्ण कला लग पिंडहू*,मर्कटि देन दिखाय॥४॥ (सब संख्या)
सूची औ प्रस्तार पुनि नष्ट और उद्दिष्ट ।
नव प्रत्यय में चारहीं भानु मते हैं इष्ट ॥५॥ (मुख्य प्रत्यय)

१ सूची ।

(सूची संख्या छंद की मत्त वरण कहि देय)

सूची कल कल पिछली दोय,
इक दो तीन पांच ज्यों होय ।

*लग=लघु गुरु, छंद के सम्पूर्ण कलाओं के आधे को पिंड कहते हैं।

दून बरण है चारु आठ,
दोनों सूची कर लो पाठ॥

टीका—मात्रिक सूची में पिछली जो दो (कल) मात्रा जुडती जाती है और वर्णिक सूची में आदिही से दूने दूने अंक होते है। यथा:—

अनुक्रम सख्या	१	२	३	४	५	६
मात्रिक सूची	१	२	३	५	८	१३
वर्णिक सूची	२	४	८	१६	३२	६४

इससे यह विदित हुआ कि ६ मात्राओं के भिन्न भिन्न प्रकार से १३ मात्रिक छंद बन सकते है। वैसे ही ६ वर्णों के भिन्न२ प्रकार से ६४ वर्णिक छंद (वृत्त) बन सकते हैं। ऐसेही और भी जानिये।

२ प्रस्तार।

(प्रस्तारहि सो रूप रचि भिन्न२ लखि लेय)

आदि गुरू तर लघु निःसंक,
दाये नक्कल बाये वंक।
बरन बरन कल कल अनुरूप,
भानु भनत प्रस्तार अनूप॥

टीका—आदि में ही जहां गुरु मिले उसी के नीचे लघु लिखो (गुरु का चिह्न ऽ है और लघु का चिह्न। है) फिर अपनी दाहिनी ओर ऊपर के चिह्नों की नक्ल उतारो। बाई ओर

जितने स्थान खाली हों (क्रम पूर्वक दाहिनी ओर से) बाईं ओर को (वंक=वक्र) गुरु के चिह्न ऽ रखते चले जावो तब तक कि जब तक सब लघु न आजावें। जब सब लघु आजावें तब उसी को उसका अंतिम भेद समझो। प्रत्येक भेद में इस बात का ध्यान रक्खो कि यदि वर्णिक प्रस्तार है तो उसके प्रत्येक भेद में उतने ही उतने चिह्न आते जावें और मात्रिक प्रस्तार हो तो प्रत्येक भेद में उतनी।ही उतनी (कल) मात्राओं के चिन्ह आते जावें, न्यूनाधिक नहीं। मात्रिक प्रस्तार में यदि बाईं ओर गुरु रखने से एक मात्रा बढ़ती हो तो लघु का ही चिन्ह रक्खो। वर्णिक प्रस्तार में पहला भेद सर्वत्र गुरुओं का रहता है। मात्रिक प्रस्तार के समकल में पहला भेद सर्वत्र गुरुओं का रहेगा और विषम कलों में पहला भेद सर्वत्र लघु से प्रारम्भ होगा। यथा—

३ वर्ण का-पहला भेद-वर्णिक SSS
४ वर्ण का पहला भेद-वर्णिक SSSS
५ मात्राका-पहला भेद-मात्रिक ISS विषम कल
६ मात्राका-पहला भेद-मात्रिक SSS सम कल।

वर्णिक प्रस्तार ३ वर्ण

म SSS
य ISS
र SIS
स IIS
त SSI
ज ISI
भ SII
न III

वर्णिक प्रस्तार ४ वर्ण		मात्रिक विषमकल प्रस्तार ५ मात्रा		मात्रिक समकल प्रस्तार ६ मात्रा	
१	SSSS				
२	|SSS	१	|SS	१	SSS
३	S|SS	२	S|S	२	||SS
४	||SS	३	|||S	३	|S|S
५	SS S	४	SS|	४	S||S
६	|S|S	५	||S|	५	||||S
७	S||S	६	|S||	६	|SS|
८	|||S	७	S|||	७	S|S|
९	SSS|	८	|||||	८	|||S|
१०	|SS|			९	SS||
११	S|S|			१०	||S||
१२	||S|			११	|S|||
१३	SS||			१२	S||||
१४	|S||			१३	||||||
१५	S|||				
१६	||||				

३ नष्ट ।

(नष्टहु पूछे भेद को रूप रचैं ततकाल)

अंक प्रश्न हरि छंदनि अंक,
नष्ट शेष सम करिये वंक ।
सूची अरध, वरन कल पूर,
गुरु नंतर कर कल इक दूर ॥

टीका—वर्णिक नष्ट में सूची के आधे आधे अंक स्थापित करो और मात्रा नष्ट में पूरे पूरे अंक स्थापित करो । छंद के पूर्णांक

से प्रश्नांक घटाओ। जो शेष बचे उसके अनुसार दाहिनी ओर से बाईं ओर के जो जो अंक क्रमपूर्वक घट सकते हों उनको गुरु कर दो। मात्रिक में जहां जहां गुरु बने उनके आगे की एक एक मात्रा मिटा दो। यथा—

वर्णिक नष्ट	मात्रिक नष्ट।
प्रश्न–बताओ, ४ वर्णों मे १०वां रूप कैसा होगा ?	प्रश्न–बताओ, ६ मात्राओं में ७वां भेद कैसा होगा ?
रीति–पूर्णांक ८×२=१६ में से १० घटाये, ६ रहे। ६ मे ४ और २ ही घट सकते हैं। इसलिये इन दोनों को गुरु कर दिया। यथा—	रीति–पूर्णांक १३ मेंसे ७ घटाओ, शेष ६ रहे। ६ मे ५ और १ ही घट सकते हैं। अतएव इन दोनों को गुरु कर दिया और उनके आगे की एक एक मात्रा मिटा दी यथा—

अर्ध सूची	१	२	४	८	पूर्णांक
साधारण चिन्ह	।	।	।	।	१६
(उत्तर)	।	S	S	।	

यही १०वां भेद हुआ।

पूर्ण सूची	१	२	३	५	८	१३
साधारण चिन्ह	।	।	।	।	।	।
(उत्तर)	S		।	S		।

यही ७वां भेद सिद्ध हुआ ऽ।ऽ।

४ उद्दिष्ट।

(कहु उद्दिष्ट रचि रूप की संख्या भेद रसाल)

गुरु अंकनि हरि छंदनिअंक,
शेष रहे उद्दिष्ट निशंक।
वरन अरध, कल जहँ गुरु होय,
अंक सूचि सिर पगतल दोय॥

टीका–वर्णिक उद्दिष्ट में सूची के अंक आधे आधे स्थापित करो मात्रिक में जहां गुरु का चिह्न हो वहां ऊपर और नीचे

भी सूची के अंक लिखो । गुरु चिन्हों के ऊपर जो संख्या हो उन सब को छद के पूर्णांक में से घटा देव। जो शेष रहेगा, वही उत्तर है । यथा—

वर्णिक उद्दिष्ट ।

बताओ, ४ वर्णों में यह SIS। कौनसा भेद है ?

अर्द्धसूची–१ २ ४ ८ पूर्णांक १६

S I S I

गुरु के चिन्हों पर ४ और १ हैं, दोनों मिलकर ५ हुए । ५ को पूर्णांक ८×२=१६ में से घटाया, शेष ११ रहे । अतएव, यह ११वां भेद है ।

मात्रिक उद्दिष्ट ।

बताओ, ६ मात्राओं में यह SISI कौनसा भेद है ?

पूर्णसूची–१ २ ५ ८ १३ पूर्णांक १३

S I S I

२ ८

गुरु के चिन्हों पर ५ और १ है । दोनों मिलकर ६ हुए। ६ को पूर्णांक १३ में से घटाया तो ७ रहे । अतएव, यह ७वां भेद है ॥

५ पाताल ।

(पातालहु लघु गुरु सकल एकत्रित दरसाय)

मात्रिक पाताल ।

तीन कोष्ठ की पंक्ति बनैये । इच्छित मत्ता लग रचि जैये । आदिहिं क्रम सों अंक धरो जू । दूजे सूची अंक भरोजू ॥ तीजे इक दो, पुनि पाछिल दो । शीर्षांक सह आगे धर दो । मत्त पतालहिं लघु गुरु पैये । गुरु भेद औरहु कछु लहिये ॥

मात्राओं की संख्या।	१	२	३	४	[illegible]	६	७	८
वर्णों की संख्या।	१	२	३	५	८	१३	२१	३४
लघु गुरु संख्या	१	२	५	१०	२०	३८	७१	[illegible]

इससे यह विदित हुआ कि ८ मात्राओं के संपूर्ण छंद ३४ ही हो सकते हैं ३४ के नीचे १३० है, यही ८ मात्राओं के सम्पूर्ण छंदों की लघु मात्राओं का ज्ञापक है। १३० की बांई ओर ७१ है, यही ८ मात्राओं के संपूर्ण छंदों के गुरु मात्राओं का ज्ञापक है। ७१ दूने १४२ और १३० का योग २७२ हुए इसलिये ८ मात्राओं के संपूर्ण छंदों में २७२ कला है और १३० और ७१ मिल कर २०१ होते हैं इतने ही वर्ण जानो। ऐसे ही और भी जानिये।

वर्ण पाताल।

वर्ण पताल सरल चौ पांती।
प्रथम अनुक्रम संख्या तांती।
दूजे सूची तीजे आधे।
आदि अंत लघु गुरुहू साधे।
चौथे इक त्रय गुणन करौजू।
गुरु लघु के सब भेद लहौजू।
सविस्तार संहिटि में पढ़िये।
पिंगल मति लहि हरि गुण गइये।

वर्ण संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८
भेद संख्या	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६
लघ्वादि लघ्वंत गुर्वादि गुर्वंत	१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८
सर्वगुरु सर्वलघु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४

इस वर्ण पाताल से यह विदित हुआ कि ८ वर्ण के सब २५६ वृत्त हो सकते हैं । इनमें से १२८ ऐसे हैं जिनके आदि में लघु हैं और १२८ ही ऐसे होंगे जिनके अन्त में लघु हैं । १२८ ऐसे होंगे जिनके आदि में गुरु है और १२८ ही ऐसे होंगे जिनके अंत में गुरु है । सब वृत्तों में मिलकर १०२४ गुरु और १०२४ ही लघु वर्ण होंगे । मर्कटि में ये सब भेद विस्तार सहित मिलते हैं ।

६ मेरु ।

(मेरु, खंड, विस्तार लग संख्या छंद लखाय)

मात्रा मेरु ।

दै दै सम कोठा अंतन से अंक सु इक इक दीजे ।
इक दो एक तीन इक चौ इमि पायें अन लिखीजे ।
शेष कोष्ट में तिर्यक् गति सों है है अंक मिलावै ।
सूने थल को या विधि भरिये मत्त मेरु है जावै ।

मात्रा मेरु—१ से १० मात्राओं का

					१	१
				१	१	२
				२	१	३
			१	३	१	४
			३	४	१	५
		१	६	५	१	६
		४	१०	६	१	७
	१	१०	१५	७	१	८
	५	२०	२१	८	१	९
१	१५	३५	२८	९	१	१०
SSSSS	SSSS||	SSS||||	SS||||||	S||||||||	||||||||||	

इस यन्त्र से यह विदित हुआ कि १० मात्राओं के छंद में

१ छंद ५ गुरु का होगा ।
१५ छंद ४ गुरु और २ लघु के होंगे ।
३५ छंद ३ गुरु और ४ लघु के होंगे ।
२८ छंद २ गुरु और ६ लघु के होंगे ।
९ छंद १ गुरु और ८ लघु के होंगे ।
१ छंद सर्व लघु का होगा ।

कुल ८९

पताका बनाने के लिये आदि ही में मेरु अंकों की आवश्यकता पड़ती है । विद्यार्थियों के लाभार्थ यहां १० मात्रा तक के मेरु अंक की कविता लिखते हैं । कंठस्थ कर लेने से परीक्षा में बड़ी सफलता होगी ।

मात्रा मेरु अंकावलि ।

प्रथम, एक दुइ, एकुइ एका । (१) १
अ गक माहिं कथि कगहिं विवेका । (२) १, १
त्र, दो इक, चौ, इक त्रय एका । (३) २, १
पंच, तीन चौ इक अभिषेका । (४) १, ३, १
षट, इक षितु सर पुनि दस धौ । (५) ३, ४, १
सत, चार दस पट इक सौ । (६) १ ६, ५, १
अठ, एक दस तिथि मुनि एका । (७) ४, १०, ६, १
नव, सर नग इकिस वसु एका । (८) १, १०, १५, ७, १
दस, शशि तिथि पैंतिस उडु, नव (९) ५, २० २१, ८, १
एकहिं भगवंत । मत्त मेरु के (१०) १, १५, ३५, २८, ९, १
अंक य, गुनि गावहु गुनवंत ॥

वर्ण मेरु ।

इच्छित कोठनि आदि अंत में एक एक लिखि आवै । दाये बाये पुनि इक द्वै त्रय चार आदि भरि जावै । शेष घरन में तिर्यक् गति सों द्वै द्वै अंक मिलावै । सिगरे कोठा या विधि साजे वरण मेरु ह्वै जावै ॥

वर्ण मेर १ से ८ वर्णों का

[illegible]	१							
[illegible]	२	१						
१	३	३	१					
१	[illegible]	६	[illegible]	१				
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	५	१			
[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०	१५	६	१		
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	
[illegible]	२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	१	

[illegible]

दूसरी सरल रीति :—

तीन कोष्ठ को यंत्र बनाओ । नीचे सरल अंक लिखि जाओ । दूजे उलटे क्रम स्वइ लिखिये। आदिहिं इक घर बाहिर रखिये । तिर्य्यक् गति गुणि पहिले दूजै । भाजि तीसरे आदिहि पूजै। वरण मेरु सुंदर बनि जावे । जाके लखे मोद अति पावे ।

१	८	२८	५६	७०	५६	२८	८	१
	८	७	६	५	४	३	२	१
	१	२	३	४	५	६	७	८

$\frac{१ \times ८}{१} = ८, \frac{८ \times ७}{२} = २८, \frac{२८ \times ६}{३} = ५६, \frac{५६ \times ५}{४} = ७०$

$\frac{७० \times ४}{५} = ५६, \frac{५६ \times ३}{६} = २८, \frac{२८ \times २}{७} = ८, \frac{८ \times १}{८} = १$

पताका बनाने के लिये आदिही में मेरु के अंकों की आवश्यकता पड़ती है । विद्यार्थियों के लाभार्थ यहां १ से ८ वर्ण तक मेरु अंक की कविता लिखते हैं । कंठस्थ कर लेने से परीक्षा में बहुत सफलता होगी ।

वर्ण मेरु अंकावलि ।

वर्णमेरु आद्यंत मे इक इक अंक लिखक।

मध्य अंक मह आठ लग लिखत चर
मय अंक ॥१॥

(१) १, १

एक वर्ण इक इक वरौ, दूजे इक दो एक । (२) १, २, १

तृतिय मध्य त्रै त्रै वरौ, दुहु ओर पुनि (३) १, ३, ३, १
एक ॥२॥

चौथे पट वरि मध्यमे, एक चार दुहु ओर। (४) १, ४, ६, ४, १

पंचवें दस दस मध्य मे, इक पच देत (५) १, ५, १०, १०. ५, १
बहोर ॥३॥

छठें बीस करि मध्य मे, इक ऋतु (६) १, ६, १५, २०, १५, ६, १
तिथि पुनि सोय।

सतें मध्य पैतिस जुगुल, इक मुनि (७) १, ७, २१, ३५, ३५, २१, ७, १
इकिस होय ॥४॥

अष्टम सत्तर मध्य है शशि वसु तारक (८) १, ८, २८, ५६, ७०, ५६, २८, ८, १
सोग ।

...र चाये क्रम रवई, वर्ण मरु
सजाग ॥५॥

७ खंड मेरु।

(उलटो क्रमही मेरु को, खंड मेरु, फल एक
एक कोष्ठ धरिये अधिक, आदिहि एकहि एक)

६ मात्राओं का खंड मेरु

१	१	१	१	१	१	१
१	२	३	४	५		
१	३	६				
१						

६ वर्णों का खंडमेरु

१	१	१	१	१	१	१
१	२	३	४	५	६	
१	३	६	१०	१५		
१	४	१०	२०			
१	५	१५				
१	६					
१						

सूचना-तिर्य्यक् गति से शेष अंकों की पूर्ति कर लो। फल मेरु सदृश ही है।

---

८ पताका।

(साजहु पताका गुरुन के छन्द भेद लगाय)

१ प्रथम मेरु के अंक सुधारो।
उतनइ कोष्ठ अधः लिखि डारो।
दूजे घर लिख सूची आकनि।
चरन अरध मत्ता भर पूरनि॥
२ सम कल अलग सूचि को प्रथमा।
विषम कलनि सब सिर पर तलमा।

नीचे तें ऊपर को चलिये।
क्रम तें सकल भेद तव लहिये ॥
३ अंत अंक तें इक इक अंका।
हरि लिख प्रथम पंक्ति निरसंका।
द्वै द्वै दूजे त्रय त्रय तीजे।
इमि हरि शेष अंक भरि लीजे ॥
४ पिंगल रीति अनेक प्रकारा।
सुगमहिं को इत कियो विचारा।
आयो अकन पुनि कहुं आवै।
भानु पलाका सहज लखावै ॥

१ मात्रा की पताका

१
१

२ मात्रा की पताका

१	१
१	१

३ मात्रा की पताका

२	१
१	३
२	

४ मात्रा की पताका

१	३	१
१	२	५
	३	
	४	

५ मात्रा की पताका

३	४	१
१	३	८
२	५	
४	६	
	७	

६ मात्रा की पनाका

१	६	५	१
१	२	५	१३
	३	८	
	४	१०	
	६	११	
	७	१२	
	९		

७ मात्रा की पताका

४	१०	६	१
१	३	८	२१
२	५	१३	
४	६	१६	
९	७	१८	
	१०	१९	
	११	२०	
	१२		
	१४		
	१५		
	१७		

८ मात्रा की पताका

१	१०	१५	७	१
१	२	५	१३	३४
	३	८	२१	
	४	१०	२६	
	६	११	२९	
	७	१२	३१	
	९	१६	३२	
	१४	१८	३३	
	१५	१९		
	१७	२०		
	२२	२३		
		२४		
		२५		
		२७		
		२८		
		३०		

यहां ८ मात्रा के पताका की रीति लिखते हैं ।

पहली पंक्ति १३ वाली
७ कोष्ठ
३४–१=३३
३४–२=३२
३४–३=३१
३४–५=२९
३४–८=२६

सू०–दायें से बायें तरफ की पहिली पंक्ति भरना प्रारम्भ करो । कोष्ठों को नीचे से ऊपर को भरते जाओ । जैसे ३३, ३२, ३१ इत्यादि । इस पहली पंक्ति में एक एक ही अंक घटित होता है । इतने ही स्थान एक एक गुरु के है ।

तीसरी पंक्ति—

४-के सूची की (१० कोष्ठ)

३२—१, २, ४ = २५
३२—१, २, ८ = २१
३२—१, ४, ८ = १९
३२—२, ४, ८ = १८
३२—१, २, १६ = १३
३२—१, ४, १६ = ११
३२—२, ४, १६ = १०
३२—१, ८, १६ = ७
३२—२, ८, १६ = ६

३ गुरु के स्थान

५ वर्णों की पताका

१	५	१०	१०	५	१
१	२	४	८	१६	३२
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	२८	
	९	१०	१५	३०	
	१७	११	२०	३१	
		१३	२२		
		१८	२३		
		१९	२६		
		२१	२७		
		२५	२९		

चौथी पंक्ति—

२ के सूची की (५ कोष्ठ)

३२—१, २, ४, ८ = १७
३२—१, २, ४, १६ = ९
३२—१, २, ८, १६ = ५
३२—१, ४, ८, १६ = ३
३२—२, ४, ८, १६ = २

४ गुरु के स्थान

पहला भेद सर्व्व गुरु का है और ३२वां भेद सर्व्व लघु का जानो।

९ मर्कटी।

(वर्ण कला लंग पिंडह मर्कटि देत दिखाय)

मात्रा मर्कटी।

सत कोठावलि प्रथम क्रमावलि दूजे सूची दीजे।
तीजे ग्रथान दुहुंन को भरिये सर्व कला लखि लीजे॥

लघु गुरु,

वर्ण पताका १ से ५ वर्णों की

१ वर्णों की पताका

१	१
१	२

२ वर्णों की पताका

१	२	१
१	२	४
	३	

३ वर्णों की पताका

१	३	३	१
१	२	४	८
	३	६	
	५	७	

४ वर्णों की पताका

१	४	६	४	१
१	२	४	८	१६
	३	६	१२	
	५	७	१४	
	९	१०	१५	
		११		
		१३		

यहा ५ वर्णों के पताका की रीति लिखते हैं। जो अंक रीत्यनुसार प्राप्त होते जाय उन्हे नीचे कोष्ठ मे ऊपर की ओर भर चालिये।

दायेंसे बाई ओर की पहिली पंक्ति—

१६ के सूची की (५ कोष्ठ)

१ गुरु के स्थान

३२—१=३१
३२—२=३०
३२—४=२८
३२—८=२४

दूसरी पंक्ति—

८ के सूची की (१० कोष्ठ)

२ गुरु के स्थान

३२—१, २ = २९
३२—१, ४ = २७
३२—२, ४ = २६
३२—१, ८ = २३
३२—२, ८ = २२
३२—४, ८ = २०
३२—१, १६ = १५
३२—२, १६ = १४
३२—४, १६ = १२

५ वर्णों की पताका

१	५	१०	१०	५	१
१	२	४	८	१६	३२
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	२८	
	९	१०	१५	३०	
	१७	११	२०	३१	
		१३	२२		
		१८	२३		
		१९	२६		
		२१	२७		
		२५	२९		

तीसरी पंक्ति—

४ के सूची की (१० कोष्ठ)

३२–१, २, ४ = २५
३२–१, २, ८ = २१
३२–१, ४, ८ = १९
३२–२, ४, ८ = १८
३२–१, २, १६ = १३
३२–१, ४, १६ = ११
३२–२, ४, १६ = १०
३२–१, ८, १६ = ७
३२–२, ८, १६ = ६

३ गुरु के स्थान

चौथी पंक्ति—

२ के सूची की (५ कोष्ठ)

३२–१, २, ४, ८ = १७
३२–१, २, ४, १६ = ९
३२–१, २, ८, १६ = ५
३२–१, ४, ८, १६ = ३
३२–२, ४, ८, १६ = २

४ गुरु के स्थान

पहला भेद सर्व्व गुरु का है और ३२वा भेद सर्व्व लघु का जानो ।

---

९ मर्कटी ।

(वर्ण कला लॅग पिढ्हू मर्कटि देत दिखाय)

मात्रा मर्कटी ।

सत कोठावलि प्रथम क्रमावलि दूजे सूची दीजे ।
तीजे गुरान दुहुंन को भरिये सर्व कला लखि लीजे ॥

---

१ लग=लघु गुरु,

चौथे सुन इक द्वै पुनि दूने हरि सिरक गुरु जानो ।
अंकन स्वड आदिहिं सो पंचम कोष्ठ सा।जि लघु मानो॥
चौथे हृत तीजे सों वरणनि छटे कोष्ठ मॅह धारो ।
तृतिय अर्द्ध धरि सप्तम पिंडहिं मत्ता मर्कटि सारो॥

१	१	२	३	४	५	६	७	८	०	१०	कला
२	१	२	३	[illegible]	८	१३	२१	३४	५५	८०	सख्या
३	१	४	०	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९०	८००	सर्वकला
४	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	गुरु
५	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०	लघु
६	१	३	७	१५	३०	५८	१००	२०१	३६०	६५०	वर्ण
७	१/२	२	४ १/२	१०	२०	३९	७३ १/२	१३६	२४७ १/२	४६१	पिंड

वर्ण मर्कटी ।

वर्ण मर्कटी लिखि क्रम सख्या दूजे सूची धारै ।
द्वै के आधे तृतिय पंक्ति में आदि अंत गल[1] सारे ॥
चौथे इक द्वै गुण करि राखिये सर्व वर्ण गहि पावै ।
पंचम चौ के आधे प्यारे गुरु लघु भेद बतावै ॥
छटवें चार पांच को जोरौ सर्व कला दरसावै ।
सप्तम में षट् के आधे धरि पिंड सकल लखि पावै॥

१ गल=गुरु लघु ।

१	१	२	३	४	५	६	वर्ण संख्या
२	२	४	८	१६	३२	६४	वृत्तों की संख्या
३	१	२	४	८	१६	३२	गुर्वादि गुर्वंत लघ्वादि लघ्वंत
४	२	८	२४	६४	१६०	३८४	सर्व वर्ण
५	१	४	१२	३२	८०	१९२	गुरु लघु
६	३	१२	३६	९६	२४०	५७६	सर्व कला
७	१½	६	१८	४८	१२०	२८८	पिंड

१० सूचिका ।

(दशम भेद कोउ सूचिका वरणत है निज बुद्धि बल ।
मर्कटि अंतर्गत स्वऊ संख्या लघु गुरु की सकल ॥)

मत्त सूचिका सूची लिखिये । अंत ओर दो अंकहिं तजिये । वाम उपर, अय ऊपर नीचै । कोठा एक एक शुभ खींचै ॥ इक तजि पुनि तल कोठा ठानो । आदि अंत लघु विय सम जानो । आदि अंत गुरु लघु तिहि-वायें । आदि अंत गुरु पुनि तिहि वायें ॥

चौथे सुन इक द्वै पुनि दूने हरि सिरंक गुरु जानो ।
अंकन स्वड आदिहिं सो पंचम कोष्ठ साजि लघु मानो ॥
चौथे हूत तीजे सों वरणनि छटे कोष्ठ मँह धारो ।
तृतिय अर्द्ध धरि सप्तम पिंडहिं मत्ता मर्कटि सारो ॥

१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कला
२	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	सङ्ख्या
३	१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९५	८९०	सर्वकला
४	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	गुरु
५	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०	लघु
६	१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५	६५५	वर्ण
७	१/२	२	४ १/२	१०	२०	३९	७३ १/२	१३६	२४७ १/२	४४५	पिंड

वर्ण मर्कटी ।

वर्ण मर्कटी लिखि क्रम संख्या दूजे सूची धारै ।
द्वै के आधे तृतिय पंक्ति में आदि अंत गल[1] सारै ॥
चौथे इक द्वै गुण करि राखिये सर्व वर्ण गहि पावै ।
पंचम चौ के आधे प्यारे गुरु लघु भेद बतावै ॥
छटवें चार पांच को जोरौ सर्व कला दरसावै ।
सप्तम मे षट् के आधे धरि पिंड सकल लखि पावै ॥

१ गल=गुरु लघु ।

सूचीपत्र।

साहित्याचार्य्य बाबू जगन्नाथप्रसाद भानु-कवि विरचित निम्न लिखित ग्रंथ और पुस्तकें इस यंत्रालय में मिल सक्ती हैं:—

१ काव्यप्रभाकर "भाषा साहित्य का अनूठा ग्रंथ"	५)
२ छन्दप्रभाकर "भाषा पिंगल सटीक"	२॥)
३ शीतलामाता भजनावलि (छत्तीसगढ़ी भाषा)	१)
४. नवपचामृत रामायण "लघु पिङ्गल सटीक"	।)
५ चतुर किसान (लेखक रामराव)	॥)
६ तुम्हीं तो हो (अर्थात् कृष्णाष्टक और रामाष्टक)	–)
७ जयहरि चालीसा	–)
८ कृषक-बाल-सखा (लेखक लोचनप्रसाद पाण्डय)	।)
९ गुलजारे सखुन (उर्दू) नवलकिशोर प्रेस लखनऊ मे प्राप्य	१॥)
१० गुलजारे फैज (उर्दू)	॥)

नोट —पुस्तक विक्रेताओं को ये ग्रंथ सस्ते दर से दिये जावेंगे। पत्रव्यवहार से कमीशन का ठहराव कर लें।

पताः—

बाबू जगन्नाथ प्रसाद,
जगन्नाथ प्रेस बिलासपुर, सी. पी.

छः मात्राओं की सूचिका ।

			आदि गुरु अंत गुरु	आदि लघु अंत लघु	
१	२	३	५	८	१३
	आद्यंत गुरु		आद्यंत लघु		

एक और दो मात्राओं तक की सूचिका व्यर्थ है। तीन मात्रा और उससे अधिक की सूचिका नियमानुसार बन सकती है।

वर्ण सूचिका ।

वर्ण सूचिका अंत तजि द्वै द्वै कोठा बांयॅ ।
आदि अंत लघु गुरु प्रथम वामाद्यंत लखायॅ॥

४ वर्णों की सूचिका ।

	आद्यंत लघु	आदि लघु अंत लघु	
२	४	८	१६
	आद्यंत गुरु	आदि गुरु अंत गुरु	

एक वर्ण की सूचिका नहीं होती ।

सूची औ प्रस्तार पुनि, नष्ट और उद्दिष्ट ।
नव प्रत्यय में चारिही, भानु मते है इष्ट ॥

"शेष केवल कौतुकम्"

इति गणित विभागो वर्णननाम तृतीयोऽध्याय. ।

शुभम्भूयात्